संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : ₹ ६
प्रकाशन दिनांक :
१ जून २०१३
वर्ष : २२ अंक : १२
(निरंतर अंक : २४६)
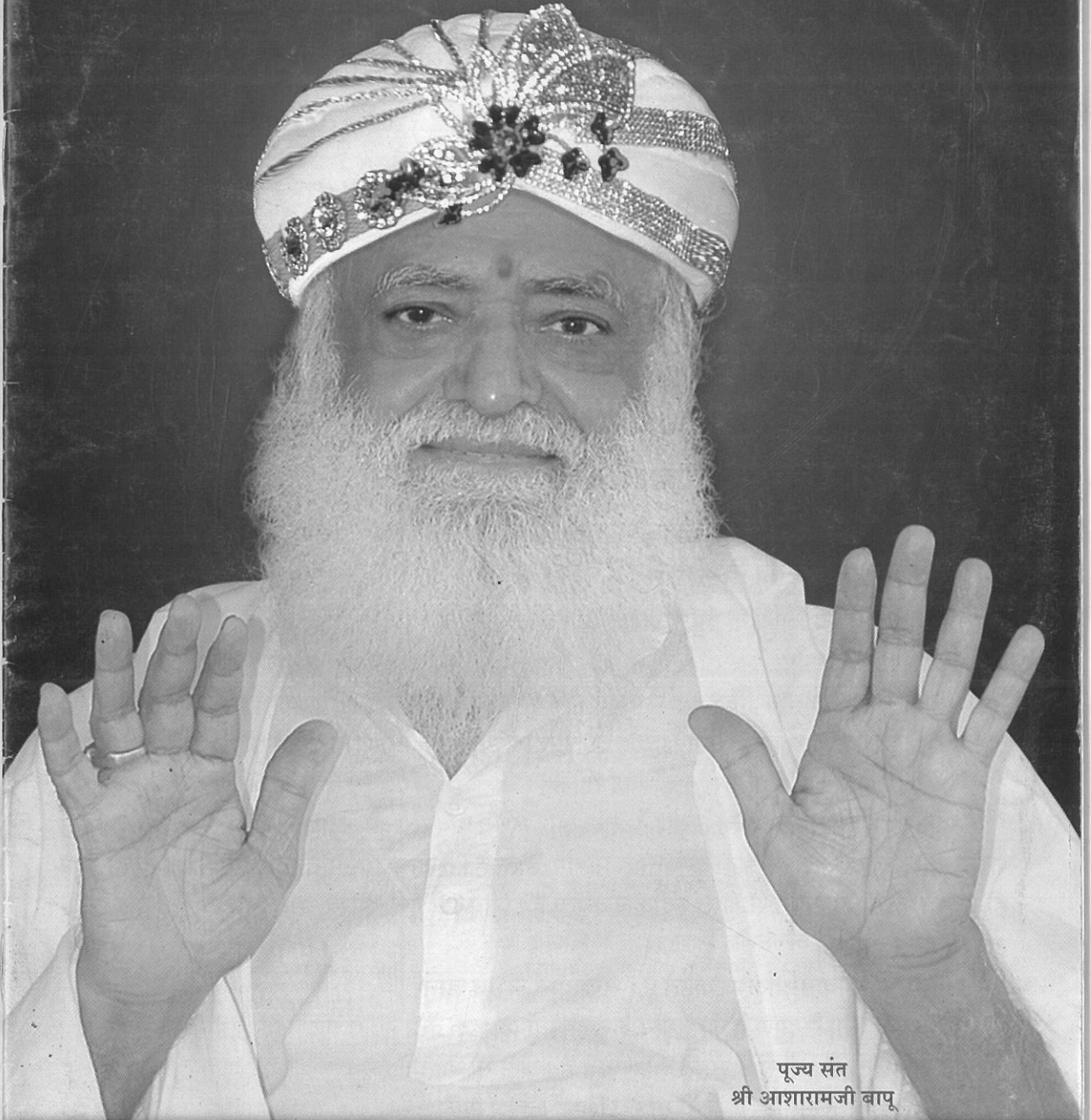
पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

शाबाश वीर ! शाबाश ! हिम्मत कर ! साहस जुटा । धैर्य और सावधानी से आगे बढ़ । आने-जानेवाली सफलता और विफलता के पार कोई ऐसा तत्त्व है, ऐसी कोई चीज है कि जहाँ न मृत्यु का भय है, न जन्म का बंधन है, न प्रकृति का प्रभाव है और न अपने परमेश्वरस्वरूप से दूरी है । ऐसे शाश्वत, सनातन स्वरूप को अवश्य पा ले, जान ले और जीते-जी मुक्त हो जा ।
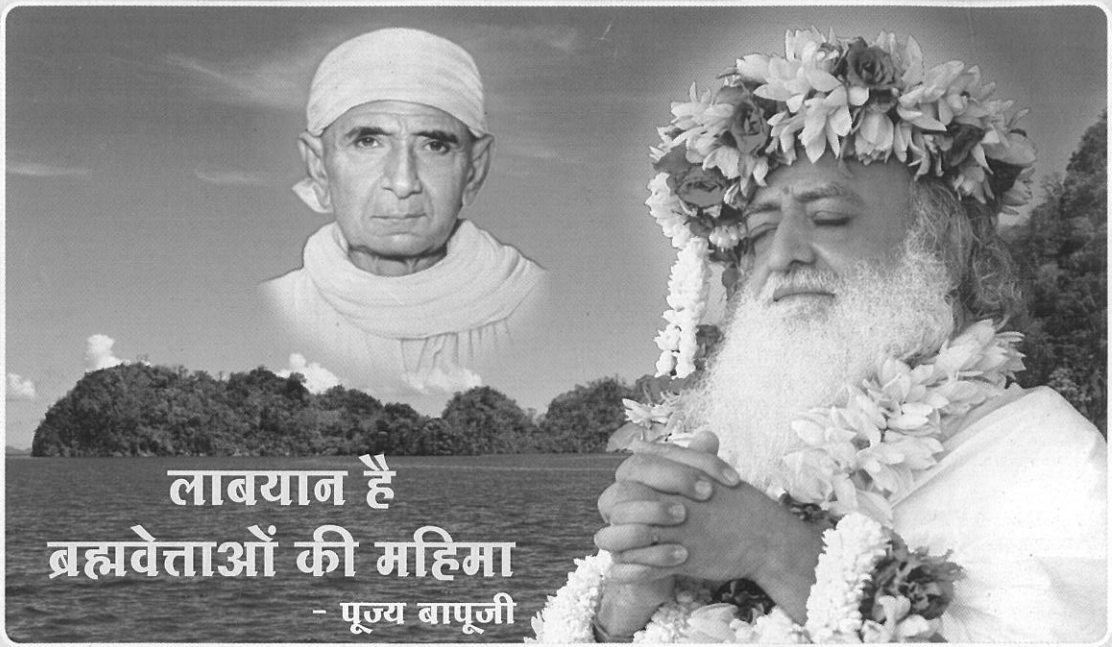
सद्गुरु मेरा शूरमा, करे शब्द की चोट। मारे गोला प्रेम का, हरे भरम की कोट॥

सद्गुरु की करुणा तो करुणा है ही, उनकी डाँट भी उनकी करुणा ही है। गुरु कब, कहाँ और कैसे तुम्हारे अहं का विच्छेद कर दें, यह कहना मुश्किल है।

श्रद्धा ही गुरु एवं शिष्य के पावन संबंध को बचाकर रखती है, वरना गुरु का अनुभव और शिष्य का अनुभव एवं उसकी माँग, इसमें बिल्कुल पूर्व-पश्चिम का अंतर रहता है। शिष्य के विचार एवं गुरु के विचार नहीं मिल सकते क्योंकि गुरु जगे हुए होते हैं सत्य में, जबकि शिष्य को मिथ्या जगत ही सत्य लगता है। किंतु शिष्य श्रद्धा के सहारे गुरु में ढल पाता है और गुरु करुणा से उसमें ढल जाते हैं। शिष्य की श्रद्धा एवं गुरु की करुणा - इसीसे गाड़ी चल रही है।

श्रद्धा हृदय की पवित्रता का लक्षण है, तर्क और संशय पवित्रता का लक्षण नहीं है। जैसे वस्त्र के बिना शरीर नंगा होता है, वैसे ही श्रद्धा के बिना हृदय नंगा होता है। श्रद्धा हृदय-मंदिर की देवी है। श्रद्धा होने पर ही मनुष्य किसीको अपने से श्रेष्ठ स्वीकार करता है। जीवन में गुरु, शास्त्र, संत और धर्म के प्रति श्रद्धा अवश्य होनी चाहिए।

'गीता' में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : **श्रद्धावान् लभते ज्ञानं...**

श्रद्धा एक ऐसा सद्गुण है जो तमाम कमजोरियों को ढक देता है। करुणा एक ऐसी परम औषधि है, जो सब सह लेती है। दोनों में सहने की शक्ति है। जैसे माँ बेटे की हर अँगड़ाई करुणावश सह लेती है, बेटे की लातें भी सह लेती है, वैसे ही गुरुदेव शिष्य की हर बालिश चेष्टा को करुणावश सहन कर लेते हैं। बाकी तो दोनों का कोई मेलजोल सम्भव ही नहीं है।

बहुत लोग किसीको मानते हैं एवं उनका आदर करते हैं इसलिए वे महात्मा हैं, ऐसी बात नहीं है। लोगों की वाहवाही से सत्य की कसौटी नहीं होती। धन-वैभव से भी सत्य को नहीं मापा जा सकता और न ही सत्ता द्वारा सत्य को मापना सम्भव है। सत्य तो सत्य है। उसे किसी भी मिथ्या वस्तु से मापा नहीं जा सकता।

(शेष पृष्ठ १० पर)

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २२ अंक : १२
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २४६)
प्रकाशन दिनांक : १ जून २०१३ मूल्य : ₹ ६
ज्येष्ठ-आषाढ़ वि.सं. २०७०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनादास हलाटवाला

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य भाषाएँ	अंग्रेजी भाषा
वार्षिक	₹ ६०	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १००	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २२५	₹ ३२५
आजीवन	₹ ५००	----

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org
www.rishiprasad.org

इस अंक में...

सृष्टियों का कोई पार नहीं

– पूज्य बापूजी

शास्त्रों में तो इस जगत की पोल खोलने की बात आती है । 'गर्ग संहिता' में आता है कि एक बार इन्द्र, ब्रह्माजी और शंकरजी गोलोक चले गये । गोलोक में तो राधाजी का ही राज्य है और सब महिलाओं के हाथ में ही सत्ता है । वहाँ की मुखिया भी महिला, मंत्री और चपरासी भी महिला, जासूसी विभाग में भी महिला... तो इन तीन पुरुषों को देखकर चन्द्रानना सखी ने पूछा : ''तुम तीन लोग कौन हो ? कहाँ से आये हो ?''

शिवजी तो शांत रहे । इन्द्र ने कहा : ''ये ब्रह्माजी हैं ।''

ब्रह्माजी ने कहा : ''ये इन्द्रजी हैं और ये शिवजी हैं ।''

''कहाँ से आये हो ? कौन-सी सृष्टि के ब्रह्माजी हो ? कौन-से स्वर्ग के इन्द्र हो ?''

''जिस सृष्टि में राजा बलि हुए थे, भगवान वामन का अवतार हुआ था, उस पृथ्वी और उस समय के हम ब्रह्माजी हैं ।''

तो तुम्हारे इस आत्मदेव की सृष्टियों का भी कोई पार नहीं है । 'श्री योगवासिष्ठ महारामायण' में आता है कि लाखों वर्ष पहले जिनको अभी तुम 'पुरुष' बोलते हो वे स्त्री हो के गृहिणी का काम करते थे । जैसे घर सँभालना, गर्भधारण करना आदि । उनकी दाढ़ी-मूँछ भी होती थी । और जिनको अभी 'महिलाएँ' बोलते हैं वे पुरुषों का काम करती थीं, वे कारोबार सँभालती थीं । तो इन सृष्टियों का कोई पार नहीं, परिवर्तनों का भी कोई पार नहीं लेकिन जो उस अनंत को अपना मानकर उसमें शांति पाता है और उसकी प्रीति, उसका ज्ञान और उसीमें अपने 'मैं' को मिलाता है, वह धन्य-धन्य हो जाता है, उसके माता-पिता को धन्यवाद है ! बाकी तो एक-से-एक मकान, एक-से-एक सौंदर्य, एक-से-एक चीजें सब नाश को प्राप्त हो रही हैं । 'गुरुवाणी' ने कहा :

किआ मागउ किछु थिरु न रहाई ।
देखत नैन चलिओ जगु जाई ॥

जब यह ऊँचा ज्ञान मिलता है तो किसीसे विरोध, किसीसे द्वेष, किसीसे ईर्ष्या... – यह सारी मन की तुच्छ दौड़-धूप शांत हो जाती है । ❐

आप गाँठ बाँध लो बस !

– पूज्य बापूजी

मैं आपको हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि आप इतना मान लो, अल्लाह को मानते हो तो अल्लाह, भगवान को मानते हो तो भगवान नाम रख दो, गॉड नाम रखते हो तो गॉड रख दो, बस एक गाँठ बाँध लो – 'जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है अच्छा है, जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि सृष्टि का मालिक हमारा सुहृद है । हमारा मंगल करने के लिए उसकी लीला है ।' भले हमें उस समय फरियाद हो या उस समय हम घबरायें अथवा चिंता करें लेकिन परिणाम हमारी अच्छाई के लिए है । सफलता होगी तो हमारा उत्साह बढ़ायेगा, विफलता हुई तो हमारी बेपरवाही, लापरवाही, पलायनवादिता को निकालने के लिए देगा । जो तू देगा वह हमारी भलाई के लिए होगा । वाह प्रभु ! वाह !!

तेरे फूलों से भी प्यार, तेरे काँटों से भी प्यार ।
जो भी देना चाहे दे दे करतार, हमें दोनों हैं स्वीकार ॥

क्योंकि देनेवाले हाथ मेरे दिलबर देवता तुम्हारे हैं प्रभु ! सुबह उठकर इतनी गाँठ बाँध लो कि 'प्रभु ! तू सद्बुद्धि देना । तू जो कुछ करेगा हमारी भलाई के लिए करेगा । बस, हमें स्मृति रहे कि तू प्राणिमात्र का सुहृद है ।' ❐

गुरु में हो श्रद्धा अटल तो अवश्य होगा सफल

– पूज्य बापूजी

बचपन में रंग अवधूत महाराज का नाम पांडुरंग था। उनके घर की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। एक बार उनके पास महाविद्यालय की फीस भरने के लिए पैसे नहीं थे। फीस भरने का अंतिम दिन आ गया। कुछ सहपाठी मित्र आये और बोले : ''हम तुम्हारी फीस भर देते हैं, फिर जब तुम्हारे पास पैसे आयें तो दे देना।''

पांडुरंग : ''नहीं, मैंने उधार न लेने का प्रण किया है। मैं किसीसे भी उधार नहीं लूँगा।'' जो नियम, व्रत या शुभ संकल्प करते हैं और उसमें लगे रहते हैं तो भगवान प्रसन्न होते हैं।

दूसरे मित्र ने कहा : ''अच्छा, उधार नहीं लेते तो कोई बात नहीं। बड़ौदा में ऐसी कई संस्थाएँ हैं जो छात्रवृत्ति देती हैं। एक संस्था है वह तो तुरंत दे देती है।''

''नहीं, किसीका दान मैं नहीं लूँगा, ऐसा मैंने निर्णय किया है। विद्यार्थी-जीवन में किसीसे पैसे लेकर पढ़ूँ ! नहीं, मेरी मेरे गुरु में और भगवान में अटूट निष्ठा है। मेरे गुरु अगर मुझे आगे पढ़ाना चाहेंगे तो पैसे भेज देंगे, नहीं चाहेंगे तो पढ़ाई पूरी ! परीक्षा में नहीं बैठूँगा।'' कैसी भी परिस्थिति में पांडुरंग की अपने गुरु के प्रति श्रद्धा डगमगाती नहीं थी।

इतने में एक अनजान आदमी प्रेमपूर्वक पूछता हुआ दरवाजे पर आया : ''पी.वी. वलामे इस कमरे में रहते हैं ?''

पांडुरंग : ''आपको उनसे क्या काम है ?''

''मुझे उनको कर्ज के पैसे लौटाने हैं।''

''आप शायद नाम भूल रहे हैं, किसी दूसरे कमरे में खोजिये।''

विद्यार्थियों ने इशारे से कहा : 'यही है।'

उस व्यक्ति ने कहा : ''मुसीबत में आपने हमारी इज्जत बचायी थी। मैं आपका जितना उपकार मानूँ उतना कम है।''

''पर मैंने किसीको पैसे दिये ही नहीं !''

''वर्षों पहले हमारी आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गयी थी, तब आपकी मातुश्री ने मेरे पिताजी को तीन सौ रुपये दिये थे। मरते समय मेरे पिताजी मुझे बोल गये थे कि ''मैं तो नहीं चुका सका पर तू मेरा ऋण ब्याजसहित चुका देना।'' मैंने पिता को वचन दिया है। अभी डेढ़ सौ रुपया तो इकट्ठा हो गया है, यह आप ले लो। बाकी के पैसे मैं ब्याजसहित चुका दूँगा।'' उस जमाने में डेढ़ सौ रुपये का डेढ़ तोला सोना मिलता था। उस जमाने के डेढ़ सौ यानी अभी के कई हजार हो गये।

पांडुरंग तो संतहृदय थे, बोले : ''नहीं-नहीं, तुम चिंता नहीं करना। इनसे मेरी फीस भर जायेगी। ब्याज की बात तो करना ही नहीं, बाकी का पैसा भी तुमको अनुकूल हो तो देना, इसकी चिंता नहीं करना।''

पांडुरंग की आँखें भर आयीं कि 'कैसा है मेरा गुरु-तत्त्व ! कैसा है प्रभु ! आज मेरे पास पैसे नहीं हैं तो कैसे इनको प्रेरित किया है !'

हरि अनंत, उसकी लीला अनंत, उसके नाम अनंत, उसका सामर्थ्य अनंत !...

नारेश्वर (गुजरात) के जंगल में मुझे तो सुबह विचार आया था लेकिन फल-दूध लानेवाले बोलते थे कि ''हमको तो रात को सपने में भगवान ने यह पगडंडी दिखायी और आपका आभास हुआ।''

सोचा मैं न कहीं जाऊँगा,
यहीं बैठकर अब खाऊँगा ।
जिसको गरज होगी आयेगा,
सृष्टिकर्ता खुद लायेगा ॥

कैसा है वह प्रेरक ! पांडुरंग को भी प्रेरित करनेवाला आत्म-पांडुरंग है और देनेवाले का प्रेरक भी वही पांडुरंग है ।

पांडुरंग मन लगाकर अभ्यास कर रहे थे पर जब परीक्षा का समय आया तो वे बीमार पड़ गये । बीमारी बढ़ती गयी । बड़ौदा में ठीक नहीं हुए तो गोधरा (गुज.) ले गये । डॉक्टर ने कहा : ''तुम परीक्षा में नहीं बैठो । तबीयत लथड़ गयी है, अनुत्तीर्ण हो जाओगे ।'' माँ तथा संबंधियों ने भी मना किया पर पांडुरंग तो दृढ़निश्चयी थे ।

पांडुरंग के एक परिचित बंगाली संन्यासी, जो ज्योतिषशास्त्र के अच्छे जानकार थे, मिलने को आये । पांडुरंग की जन्मकुंडली देखकर समझाने लगे कि ''तुम्हारे ग्रह इस साल तुमको परीक्षा नहीं देने देंगे । यदि तुम दोगे तो उत्तीर्ण नहीं हो सकोगे । तबीयत तो खराब है फिर अनुत्तीर्ण होने को क्यों बैठते हो परीक्षा में ?'' वे बार-बार आते और समझाते लेकिन पांडुरंग को अपने गुरु के ऊपर पूरा भरोसा था । वे कहते : ''नहीं, मुझे तो गुरुदेव की प्रेरणा हुई है । मैं तो इस साल ही परीक्षा दूँगा और अच्छे अंकों से पास होऊँगा ।''

उन्होंने परीक्षा दी तो द्वितीय श्रेणी में पास हो गये । ज्योतिषी का ज्योतिष भी झूठा कर दिया क्योंकि गुरु में श्रद्धा थी । डॉक्टर का डॉक्टरी-विज्ञान भी झूठा कर दिया क्योंकि गुरुमंत्र में, गुरु में श्रद्धा थी । जिनकी गुरु में और गुरुमंत्र में श्रद्धा है, उनको ज्योतिषियों के पास भटकने की जरूरत नहीं है, उनको डॉक्टर के ऑपरेशनों के चक्कर में आने की जरूरत नहीं पड़ती । कई आपदाएँ ऐसे ही चली जाती हैं थोड़े से ही उपाय से । तो वे लोग खूब-खूब भाग्यशाली हैं जिनके जीवन में भगवन्नाम की दीक्षा है ।

काठिया बाबा को एक संत मिले और उपदेश मिला तो महान सिद्धपुरुष हो गये । नरेन्द्र को रामकृष्ण मिले तो स्वामी विवेकानंद हो गये । रामजी को वसिष्ठ गुरु मिले तो मर्यादापुरुषोत्तम राम होकर अभी भी सम्मानित हो रहे हैं । श्रीकृष्ण को सांदीपनि गुरु मिले और दूसरे संतों का सम्पर्क करते थे तो शत्रुओं के बीच भी उनकी बंसी बजती रही । ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु की महिमा लाबयान है ! ❑

किसके पास बैठें ?

तुम उन्हींके पास बैठना जिनके पास बैठने से तुम्हें शांति, संतोष, तृप्ति, सत्य व आनंद मिले । जिनके जीवन में कोई सुगंध व स्वाद हो । जिनकी आँखों व श्वासों से परमात्मा की सुवास आती हो, जिनके आसपास मस्ती की हवा व रोम-रोम में खुशियों का खुमार हो, ऐसे ब्रह्मवेत्ता करुणासिंधु संतों के पास ही बैठना व उन्हींसे परमात्मा की बात पूछना । हर किसीसे मत पूछने बैठ जाना । हर किसीकी बात भी मत सुन लेना, नहीं तो जिंदगी ऐसे ही गँवा दोगे । गँवा ही रहे हो । जिनके पास नहीं बैठना चाहिए वहाँ बैठते हो और जिनके पास बैठना चाहिए उनसे दूर भागते हो ।

जिन संतों के पास बैठने से विकार व वासनाएँ शांत होती हों, ध्यान लगता हो, परमात्म-ज्ञान व आनंद की रसधार आती हो, बस वहीं बैठ जाना । चूकना मत, चाहे कितना भी बाह्य नुकसान क्यों न होता हो ! वहीं से तुम्हारे जीवन की वास्तविक यात्रा शुरू हो सकती है, वहीं से तुम्हें सन्मार्ग मिल सकता है । क्योंकि इस जगत में पाखंडी व बनावटी लोग बहुत हैं लेकिन सत्य का साक्षात्कार किये हुए, वास्तविक जीवन को जाननेवाले आत्मवेत्ता महापुरुष कहीं विरले ही हैं । अतः तुम भी कहीं इस भीड़ में खो न जाना । सावधान रहना और ब्रह्मवेत्ता सच्चे संतों की शरण में ही जाना । **– स्वामी श्री कूटस्थानंदजी महाराज**

गुरु कौन ?

संतान दो तरह की होती है - एक 'बिंदु संतान' और दूसरी 'नाद संतान'। पिता से जो पुत्र की उत्पत्ति होती है, उसको बिंदु संतान बोलते हैं, वे बिंदु से उत्पन्न होते हैं। और गुरु से जो शिष्य की उत्पत्ति होती है, उसको नाद संतान बोलते हैं, वे नाद पुत्र हैं। जब गुरु अपने शिष्य को उपदेश करते हैं कि 'तुम कौन हो' तो एक नया ही भाव उदय होता है। वे बताते हैं कि 'तुम भगवान के भी आत्मा हो। तुम इस देह से अतीत, द्रष्टा हो।' इस नवीन भाव की उत्पत्ति गुरु के उपदेश से होती है। जैसे आधिभौतिक जगत में माता-पिता जन्म देनेवाले होते हैं, वैसे आधिदैविक और आध्यात्मिक जगत में गुरु जन्म देनेवाले होते हैं। इसीसे गुरु के लिए कहा गया है :

गुरुर्ब्रह्मा... महेश्वरः। गुरुर्साक्षात्... श्रीगुरवे नमः॥

ब्रह्मा उसको कहते हैं जो पैदा करे। शिष्य को उत्पन्न किसने किया ? गुरु ने। गुरु ने ही शिष्य में साधकत्व को जन्म दिया। 'तुम अजन्मा आत्मा हो, तुम ऐसे हो' - यह संस्कार, यह भाव दिया इसलिए गुरु ब्रह्मा हैं - **गुरुर्ब्रह्मा**। और उन्हींने बारम्बार सत्संग के द्वारा, उपदेश के द्वारा पोषण किया है। विष्णु का काम पालन करना है, और गुरु ने भी पालन किया है इसलिए गुरु विष्णु हैं - **गुरुर्विष्णुः**। शिष्य के जीवन में जितने दोष-दुर्गुण है, उनका संहार किसने किया ? उनको मिटाया किसने ? कि गुरु ने, इसलिए वे रुद्र हैं - **गुरुर्देवो महेश्वरः**। और जब स्थूल, सूक्ष्म व कारण शरीर की उपाधि को हटाकर शुद्ध आत्मा की दृष्टि से देखते हैं तो **गुरुर्साक्षात् परब्रह्म !** उपनिषद् में आता है :

त्वं नः पिता स भवान् तमसः पारं पारयति।

तुम हमारे पिता हो। पिता कैसे हो ? क्योंकि तुम हमको इस घोर अंधकार (अज्ञान के अँधेरे) से पार पहुँचाते हो, इसलिए तुम हमारे पिता हो।

'गीता' में भगवान कहते हैं - **महर्षीणां भृगुरहम्**। जिसमें पाप को गलाने की शक्ति है, जैसे सुनार सोने को जलाकर उसमें से मैल निकाल देता है, ऐसे भृगु - गुरु उसको कहते हैं। 'भृगु' शब्द के अंत में जो 'गु' है, उसीसे गुरु शब्द प्रारम्भ हुआ। और यह 'ऋ' तो है ही 'भृ' में और भ् है... 'भृगु' पीछे से पढ़ो तो गु ऋ और भ। तो भृगु माने हुआ गुरुभक्त ! तो भृगु अर्थात् गुरुभक्त कौन है ? भगवान कहते हैं मैं हूँ : **महर्षीणां भृगुरहम्**। और प्रेरणा देते हैं कि तुम भी गुरु की भक्ति करो।

गुरु कौन है ? जो दुःख को जला दे - एक बात, जो पाप को जला दे - दूसरी बात, जो वासना को जला दे - तीसरी बात, जो अज्ञान को जला दे - चौथी बात और जो अज्ञानकृत सम्पूर्ण भेद-विभेद को जला दे, भस्म कर दे। यह महाराज भूननेवाले का नाम भृगु है। **भर्जनात् भृगुः**। जो संसार की वासना को पूरी करे सो नहीं, जो मिटावे, वह गुरु ! - **स्वामी श्री अखंडानंदजी सरस्वती** ☐

पुण्यदायी तिथियाँ

२१ जून : दक्षिणायन आरम्भ (पुण्यकाल : सूर्योदय से सुबह १०-३५ तक), वर्षा ऋतु प्रारम्भ
३ जुलाई : योगिनी एकादशी
७ जुलाई : चतुर्दशी-आर्द्रा नक्षत्र योग (प्रातः ५-१२ से सुबह १०-२० तक) (ॐकार का जप अक्षय फलदायी)
८ जुलाई : सोमवती अमावस्या (सूर्योदय से दोपहर १२-४५ तक)
१६ जुलाई : संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर ३-४७ तक)
१९ जुलाई : देवशयनी एकादशी, चतुर्मास व्रतारम्भ

जब पुतला बोला : "प्रणाम गुरुवर !"

– पूज्य बापूजी

आज का मनमुख मनुष्य विश्वास न करे ऐसी-ऐसी योगशक्तियों की गाथाएँ शास्त्रों में आती हैं। गोरखनाथजी के गुरु थे जोगी मत्स्येन्द्रनाथ। यात्रा करते-करते दोनों योगियों ने तालाब के किनारे एक शांत, निरापद जगह देखी और वहाँ टिकने का भाव बना लिया।

मत्स्येन्द्रनाथ ने कहा : "बेटा गोरख ! जिस संजीवनी विद्या के बारे में तुमने आज तक सुना है न, उसको तुम सिद्ध कर सकते हो इस एकांत में। संजीवनी विद्या को सिद्ध करना है तो चार बातें चाहिए - **श्रद्धा** तुममें है, **तत्परता** भी है, **ब्रह्मचर्य-संयम** भी है, केवल **एकांत में** रहो और ध्यान से उसका **जप** करो। संजीवनी सिद्ध कर लो।"

"जो आज्ञा गुरु महाराज !"

गुरु महाराज निकल गये। अब ये जोगी महाराज जप करते-करते ऐसे एकाग्र हुए कि थोड़े ही समय में पूरा शरीर जपमय हो गया।

ऐसे साधक भी हैं जो जप करते हैं और शरीर जपमय हो जाता है, फिर रोटी बनाते हैं तो रोटी पर या बैंगन काटते हैं तो बैंगन में 'ॐ' की आकृति आ जाती है। ऐसे हजारों-हजारों संसारी जीवन जीनेवाले साधकों का यह अनुभव है। संसारी लोग झूठ भी बोलते हैं, पति-पत्नी के व्यवहार में भी फिसलते हैं तब भी मंत्र का प्रभाव रोटी में दिख सकता है तो संजीवनी मंत्र का जप करनेवाले तो जोगी थे, ब्रह्मचारी थे, झूठ-कपट रहित थे और एकांत में साधना करते थे।

वहाँ से थोड़ी दूरी पर कनक गाँव था। गाँव के बच्चे तालाब के किनारे खेलने आते थे। तालाब की गीली मिट्टी लेकर उन्होंने बैलगाड़ी बनायी। बैलगाड़ी बनाने तक तो सफल हुए लेकिन बैलगाड़ी चलानेवाला मनुष्य का पुतला बनाने में वे विफल हो रहे थे। लड़कों को सूझा कि वहाँ जोगी महाराज रहते हैं।

"बाबाजी, बाबाजी ! हमको गाड़ीवाला बनाकर दीजिये।"

गोरखनाथजी ने कहा : "घर जाओ !" उन्होंने सोचा कि 'अगर मैं बनाऊँगा तो भीड़भाड़ से लिप्त हो जाऊँगा।' लेकिन वे बच्चे दूसरे दिन भी आये।

"बाबाजी ! हमको बैलगाड़ीवाला बनाकर दो। हम बच्चे हैं न, आप बना सकते हो।"

लड़कों का प्रेम, नम्रता, हठ देखकर गोरखनाथजी ने कहा : "लाओ बेटे ! बना दूँ।"

वे पुतला बनाने लगे। जब तुम रोटी बनाते हो तब तुम थोड़े ही सोचते हो कि हमारी रोटी में 'ॐ' निकले। रोटी बनाते-बनाते रोटी में 'ॐ' का प्रभाव आ जाता है। गोरखनाथजी के तो रोम-रोम से संजीवनी मंत्र चल रहा था। वे पुतले के अंग-प्रत्यंग बनाते गये और मंत्र के प्रभाव से वह सजीव होता गया। उसमें मानवीय हिलचाल होने लगी।

जब पुतला पूरा हुआ तो वह बोला : "प्रणाम गुरुवर !"

गोरखनाथजी चौंके, यह क्या हो गया ! लड़के घबराये। आज का आदमी तो यह सुनकर बोलेगा, 'यह सब बंडलबाजी है।' लेकिन मैं उनको कहता हूँ कि मैं बताता हूँ वैसी साधना करो। बंडल

बोलने की तुम्हारी बेवकूफी चली जाय ऐसी-ऐसी साधनाएँ हैं ! हालाँकि संजीवनी विद्या की साधना मैंने नहीं की है, न ही मैं जानता हूँ लेकिन मैं मेरी थोड़ी-बहुत भी साधना सिखाऊँ न, तो तुमको मानना पड़ेगा कि 'अरे, इतना सारा क्या-क्या है !' हमने केवल ४० दिन का अनुष्ठान किया था और उसका ऐसा खजाना मिला कि बाँटते-बाँटते ४८ साल हो गये, अभी तक नहीं खूटता है। उसी खजाने के प्रभाव से तो इतने लोग बैठे रहते हैं घंटोंभर ! मंत्रदीक्षा के बाद अगर एकाग्रता, तत्परता और संयम जुड़ जाय तो उस लाभ के आगे तुमको लगेगा कि 'धत् तेरे की ! दुनियादार क्यों मजदूरी कर रहे हैं प्रमाणपत्रों के पीछे ! तीन पढ़े हुए बापू को कैसा लाभ हो गया !'

गोरखनाथजी ने कहा : ''आसन लगाकर बैठ जा।'' वह बैठ गया। लड़के तो भागे : ''भूत-भूत... मिट्टी में से भूत बन गया।'' जाकर गाँववालों को कहा। गाँववाले आये देखने और वह तो बच्चा निकला ! गाँववालों ने गोरखनाथजी को नवाजा। इतने में गुरु महाराज भिक्षाटन करते हुए भिक्षा व दूध का कमंडलु ले आये और दूध गर्म करके बच्चे को पिलाया तो वह सकुर-सकुर पी गया। मिट्टी में से बना हुआ बालक ! यह शरीर भी मिट्टी में से ही तो बना है, माँ-बाप के रज-वीर्य से।

मत्स्येन्द्रनाथजी ने बच्चे पर अपनी कृपादृष्टि डाली। गाँव के लोग आने लगे। अब यहाँ एकांत-साधना, जप का तो समय गया। जोगियों ने वहाँ से विदाई लेना ही अच्छा माना। इतने में गाँव के ब्राह्मण और ब्राह्मणी, जिनको संतान नहीं थी, उन्होंने देखा कि इन महाराज ने तो बबलू बना दिया है। ब्राह्मण का नाम था मधु और पत्नी का नाम था गंगा। उन्होंने बाबाजी की स्तुति की और गाँववालों ने बताया कि ''ये निःसंतान हैं। आपकी कृपा से इन्हें संतान मिल सकती है।''

गोरखनाथ और मत्स्येन्द्रनाथजी समझ गये। उन्होंने कहा : ''देखो, तुम घर पर जाकर इस बालयोगी के स्वागत की तैयारी करो, हम आते हैं। तुम्हारी सात-सात पीढ़ियाँ तार देगा यह बालक। यह एक खास योगी बालक है, ऐसा समझकर इसका पालन-पोषण करना। हम भी बीच-बीच में आते रहेंगे और फिर कोई ऐसा समय आयेगा कि यह सब छोड़कर लोगों का भला करेगा।''

बालक के संस्कार करने की, गोद लेने की सारी व्यवस्था हो गयी। गाँववालों ने पूरे कनक गाँव को अशोक के पत्तों से सजाया। शहनाइयाँ, साज, ताल-तम्बूरे के साथ गाँव में उत्सव हुआ। दो योगेश्वर अपनी योगशक्ति से बनायी हुई संतान ले आ रहे हैं।

आज रे आनंद भयो
म्हारा सद्‌गुरु आया पांवणा...

उस बालक को ले जा रहे हैं कनक गाँव में। पंचामृत आदि से बालक के चरण धोये गये। वेदवादी ब्राह्मणों के द्वारा बालक की आरती उतारी गयी। 'हे योगी पुरुष ! हे अजन्मा आत्मा ! सृष्टि के नियमों से विलक्षण ढंग से प्रकट होनेवाले प्रभु ! आप इस घर में निवास करिये और गंगा और मधु आपके माता-पिता जैसे लगेंगे लेकिन आप सभीके माता-पिता हो !' बच्चा अर्पित कर दिया और जोगी ने देखा कि अब **'प्रतिष्ठा – शूकरी विष्ठा...'** एकांत समाधि का समय, जगह गयी... चलते बने।

इस आत्मदेव की क्या महिमा है ! आकाश में बैठकर भगवान दुनिया नहीं बनाते, यहीं बनाते हैं। मिट्टी में से जो बालक बना, वह आगे चलकर बड़ा सुप्रसिद्ध योगी हुआ। चौरासी सिद्धों में उसका नाम है। जैसे मत्स्येन्द्रनाथ जोगी, गोरखनाथ जोगी ऐसे ही वह बालक कहलाया 'गहिनीनाथ जोगी'। हमारे आत्मदेव का कैसा सामर्थ्य है ! मंत्रशक्ति ईश्वर की विलक्षण सम्पदा है। ☐

(मुखपृष्ठ २ से 'लाबयान है ब्रह्मवेत्ताओं की महिमा' का शेष)

माँ आनंदमयी के पास इंदिरा गांधी जाती थीं इसलिए माँ आनंदमयी बड़ी हैं, ऐसी बात नहीं है। वे तो हैं ही बड़ी, बल्कि यह इंदिरा गांधी का सौभाग्य था कि ऐसी महान विभूति के पास वे जाती थीं। रमण महर्षि के पास मोरारजीभाई देसाई जाते थे इससे रमण महर्षि बड़े थे, ऐसी बात नहीं है वरन् मोरारजीभाई का सौभाग्य था कि महर्षि के श्रीचरणों में बैठकर आत्मज्ञान-आत्मशांति पाने के योग्य बनते थे।

लोग यदि ऐसे ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों को जानते-मानते हैं तो यह लोगों का सौभाग्य है। कई ऐसे लोग हैं जिन्हें लाखों लोग जानते हैं, फिर भी वे ऊँची स्थिति में नहीं होते। कई ऐसे महापुरुष होते हैं जिन्हें उनके जीवनकाल में लोग उतना नहीं जानते जितना उनके देहावसान के बाद जानते हैं। भारत में तो ऐसे कई महापुरुष हैं जिन्हें कोई नहीं जानता जबकि वे बड़ा ऊँचा जीवन जीकर चले गये।

जैसे प्रधानमंत्री आदिवासियों के बीच आकर उन्हींके जैसी वेशभूषा में रहें तो उनकी योग्यता को आदिवासी क्या जान पायेंगे ! वे तो उनके शरीर को ही देख पायेंगे। उनके एक हस्ताक्षर से कितने ही नियम बदल जाते हैं, कितने ही लोगों की नींद हराम हो जाती है। इस बात का ज्ञान आदिवासियों को नहीं हो पायेगा। ऐसे ही ज्ञानी महापुरुष भी स्थूल रूप से तो और लोगों जैसे ही लगते हैं, खाते-पीते, लेते-देते दिखते हैं किंतु उनकी सूक्ष्म सत्ता का बयान कर पाना सम्भव ही नहीं है। किसीने ठीक ही कहा है :

पारस अरु संत में बड़ा अंतरहू जान ।
एक करे लोहे को कंचन ज्ञानी आप समान ॥

पारस लोहे को स्वर्ण तो बना सकता है किंतु उसे पारस नहीं बना सकता जबकि पूर्ण ज्ञानी व्यक्ति को अपने ही समान ब्रह्मज्ञानी बना सकता है।

अनुभूति कराने के लिए ईश्वर तैयार हैं, गुरु समर्थ हैं तो फिर हम देर क्यों करें ? यदि ईश्वर-अनुभूति के रास्ते चलते-चलते मर भी गये तो मरना सफल हो जायेगा एवं जीते-जी ईश्वर-अनुभूति करने में सफल हो गये तो जीना सफल हो जायेगा।

ऐसे ही ब्रह्मज्ञानी संतों का दर्शन व सत्संग करते-करते मर भी गये तो अमर पद के द्वार खुल जायेंगे और इसी जन्म में लक्ष्य साध्य करने की दृढ़ता बढ़ाकर जीवन को उनके सिद्धांत-अनुरूप बनाने में तत्पर हो गये तो जीवन्मुक्त हो जायेंगे। □

सुभाषित रत्नावली

गुरुभ्यस्त्वासनं देयमभिवाद्याभिपूज्य च ।
गुरुमभ्यर्च्य वर्धन्ते आयुषा यशसा श्रिया ॥

'गुरु के आने पर उन्हें प्रणाम करे और विधिवत् पूजा करके उन्हें बैठने के लिए आसन दे। गुरु की पूजा करने से मनुष्य के यश, आयु और श्री की वृद्धि होती है।'

(महाभारत, अनुशासन पर्व : १६२.४४)

शरीरमेव सृजतः पिता माता च भारत ॥
आचार्यशिष्टा या जातिः सा दिव्या साजरामरा ।

'भारत ! पिता और माता केवल शरीर को ही जन्म देते हैं परंतु आचार्य का उपदेश प्राप्त करके जो द्वितीय जन्म उपलब्ध होता है, वह दिव्य है, अजर-अमर है।'

(महाभारत, शांति पर्व : १०८.१९-२०)

एकमेवाक्षरं यस्तु गुरुः शिष्यं प्रबोधयेत् ।
पृथिव्यां नास्ति तद्द्रव्यं यद्दत्त्वा चनृणी भवेत् ॥

'जो गुरु एक भी अक्षर शिष्य को पढ़ा देता है, उस छात्र के लिए भूमंडल में कोई वस्तु नहीं है जिसे देकर वह उऋण हो जाय।'

(चाणक्य नीति : १५.२) □

लाटू बने अद्भुतानंद महाराज

– पूज्य बापूजी

रामकृष्ण परमहंस, जिनको 'ठाकुर' भी बोलते थे, उनके कई एम.बी.बी.एस., एल.एल.बी. पढ़े भक्त भी थे और सीधे-सादे भावुक भक्त भी। उनमें से एक ऐसा भक्त था जो पढ़ा-लिखा तो ज्यादा नहीं था और सिर्फ भावुक भी नहीं था। भावना के साथ थोड़ी सूझबूझ भी रखता था लेकिन पढ़े-लिखों को देखकर उसे अपने भविष्य के बारे में चिंता होती थी। उसका नाम था लाटू।

लाटू ने एक बार रामकृष्ण परमहंस को कहा कि ''ठाकुर ! फलाने इतने विद्वान हैं, फलाने इतने हैं... मैं लाटू क्या लट्टू की नाईं घूमता रहूँगा ? मेरा क्या होगा, मुझे पता नहीं। राम-मंदिर में गाते हैं भक्त – **नहिं विद्या नहिं बाहुबल, नहिं गाँठिन को दाम...** मैं तो ऐसा लाटू हूँ !''

ठाकुर ने कहा : ''तो क्या है, तू काहे को चिंता करता है ? मैं हूँ न !''

''तो ठाकुर ! मैं क्या करूँ ?''

बोले : ''अरे तू मेरा ध्यान किया कर, मेरा नाम जपा कर। सब हो जायेगा।''

लाटू की बाँछें खिल गयीं, आँखों में चमक दौड़ गयी। 'यह तो बड़ा आसान है ! भगवान जो लीलाएँ करके गये हैं, उनको शास्त्रों में पढ़कर कल्पना से उनका अभ्यास करना तो बड़ा कठिन है। गुरु महाराज तो साक्षात् हैं !' वह लग गया। जैसे भगवान की लीला सुनते हैं, चर्चा करते हैं, वैसे रामकृष्ण का नाम जपे, उनका ध्यान करे, उनकी चर्चा-लीला अहोभाव से सुने। ठाकुर की आज्ञा ही उसके लिए सर्वस्व हो गयी।

रामकृष्ण को देखते-देखते शांत, मौन हो जाय, एकांत में रहे। तो शुद्ध अंतःकरण में आत्मविश्रांति मिलने लगी। 'लाटू' में से 'लाटू महाराज' नाम पड़ा। उसके पास अद्भुत संकल्पशक्ति आ गयी। जो संतों के पास ऊँचाइयाँ होती हैं, वही इस लाटू के पास देखकर रामकृष्ण के शिष्य विवेकानंद उनको 'अद्भुतानंद महाराज' बोलते थे। अद्भुत उनका कला-कौशल्य ! शास्त्र-वचन उन्होंने अपने जीवन में लाकर आम आदमी के लिए सरल कर दिया। लोग तो बोल लेते हैं **ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः...** लेकिन लाटू ने प्रत्यक्ष कर दिया। रामकृष्ण के खास उन्नत शिष्यों में अद्भुतानंद महाराज का बड़ा ऊँचा आदर, ऊँचा दर्जा था।

'गीता' में श्रीकृष्ण ने कहा है कि भक्तियोग, ज्ञानयोग और कर्मयोग – ये तीनों योग अपने-आपमें स्वतंत्र हैं। लेकिन इन तीन योगों के उपरांत जो आत्मवेत्ता सद्गुरु हैं, उनमें प्रीति हो जाय, श्रद्धा हो जाय तो उससे, गुरुभक्तियोग से भी मुक्ति-लाभ हो जाता है। और यह लाटू महाराज ने इस युग में सिद्ध करके दिखा दिया। लाटू में से अद्भुतानंद बन गये।

जिनको मनुष्य-जीवन का, ईश्वरप्राप्ति का महत्त्व समझ में आता है, उनको गुरु मिल जायें तो फिर वह चाहे दो-तीन पढ़ा हो चाहे अँगूठाछाप, चाहे लाटू महाराज हो, चाहे आसुमल महाराज हो, चाहे कोई महाराज हो लेकिन गुरुकृपा ऐसा चमत्कार करती है कि अद्भुत आनंद, अद्भुत सूझबूझ, अद्भुत दैवी कार्य उनके जीवन में प्रत्यक्ष दिखायी देते हैं ! ❑

सर्व धर्म समान ?

सनातन धर्म के प्रति हिन्दुओं की आस्था नष्ट करने के लिए ब्रिटिश शासन द्वारा परतंत्र भारत में मैकाले की जो शिक्षा-प्रणाली शुरू की गयी थी, उसके प्रभाव से आज भी शिक्षित समाज के प्रतिष्ठित लोग अपने सनातन धर्म की महिमा से अनभिज्ञ हैं तथा इसका गौरव भूलकर पाश्चात्य काल्पनिक कल्चर से प्रभावित हो रहे हैं । क्योंकि आज भी भारत के विद्यालयों-महाविद्यालयों में वही झूठा इतिहास पढ़ाया जा रहा है, जो अंग्रेज कूटनीतिज्ञों ने लिखा था । भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद राजनैतिक पार्टियों ने अपना वोट-बैंक बनाने के उद्देश्य से 'सब धर्म समान हैं' - ऐसा प्रचार शुरू किया । उनका उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्त करना ही था ।

बाजार में मिलनेवाले सब उपकरण समान नहीं होते, सब वस्त्र समान नहीं होते । उनका मूल्य उनके गुण-दोष के आधार पर भिन्न-भिन्न निर्धारित किया जाता है । 'सब राजनैतिक पार्टियाँ समान हैं'- ऐसा कोई कहे तो राजनेता नाराज हो जायेंगे । सब अपनी पार्टी को श्रेष्ठ और अन्य पार्टियों को कनिष्ठ बताते हैं, पर धर्म के विषय में 'सर्व धर्म समान' कहने में उनको लज्जा नहीं आती ।

सनातन धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्म अपने धर्म को ही सच्चा मानते हैं और दूसरे धर्मों की निंदा करते हैं । केवल सनातन धर्म ने ही अन्य धर्मों के प्रति उदारता और सहिष्णुता का भाव सिखाया है । इसका मतलब यह नहीं कि सब धर्म समान हैं । गंगा का जल और तालाब, कुएँ या नाली का पानी समान कैसे हो सकता है ? यदि समस्त विश्व के सभी धर्मों का अध्ययन करके तटस्थ अभिप्राय बतानेवाले विद्वानों ने किसी एक धर्म को तर्कसंगत और श्रेष्ठ घोषित किया हो तो उसकी महानता सबको स्वीकार करनी पड़ेगी ।

सम्पूर्ण विश्व में यदि किसी धर्म को ऐसी व्यापक प्रशस्ति प्राप्त हुई है तो वह है 'सनातन धर्म' । जितनी व्यापक प्रशस्ति सनातन धर्म को मिली है, उतनी ही व्यापक आलोचना ईसाइयत की अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों और फिलॉसफरों (दार्शनिकों) ने की है । सनातन धर्म की महिमा एवं सच्चाई को भारत के संत और महापुरुष तो सदियों से सैद्धांतिक व प्रायोगिक प्रमाणों के द्वारा प्रकट करते आये हैं । फिर भी पाश्चात्य विद्वानों से प्रमाणित होने पर ही किसी बात को स्वीकार करनेवाले, पाश्चात्य बौद्धिकों के गुलाम - ऐसे भारतीय बुद्धिजीवी लोग इस शृंखला को पढ़कर भी सनातन धर्म की श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तो हमें प्रसन्नता होगी और यदि वे सनातन धर्म के महान ग्रंथों का अध्ययन करें तो उनको इसकी श्रेष्ठता के अनेक सैद्धांतिक प्रमाण मिलेंगे । इसके अलावा यदि वे किसी आत्मानुभवी महापुरुष के मार्गदर्शन में सत्संग-साधना करें तो चिंता, दुःख, बंधन से छूटकर जीवन हरिमय हो जायेगा ।

निम्नलिखित विश्वप्रसिद्ध विद्वानों के वचन सनातन धर्म की महत्ता प्रतिपादित करते हैं और 'सर्व धर्म समान' कहनेवाले लोगों के मुँह पर करारा तमाचा लगाते हैं :

(१) ''मैंने यूरोप और एशिया के सभी धर्मों का अध्ययन किया है परंतु मुझे उन सबमें हिन्दू धर्म ही सर्वश्रेष्ठ दिखायी देता है । मेरा विश्वास है कि इसके सामने एक दिन समस्त जगत को सिर

झुकाना पड़ेगा। मानव-जाति के अस्तित्व के प्रारम्भ के दिनों से लेकर अब तक पृथ्वी पर जहाँ जिंदे मनुष्यों के सब स्वप्न साकार हुए हैं, वह एकमात्र स्थान है - भारत।'' **- रोमां रोलां (फ्रेंच विद्वान)**

(२) ''मैंने ४० वर्षों तक विश्व के सभी बड़े धर्मों का अध्ययन करके पाया कि हिन्दू धर्म के समान पूर्ण, महान और वैज्ञानिक धर्म कोई नहीं है।''

- डॉ. एनी बेसेंट
(ब्रिटिश लेखिका, थियोसॉफिस्ट, समाजसेविका)

(३) ''मैं ईसाई धर्म को एक अभिशाप मानता हूँ। इसमें आंतरिक विकृति की पराकाष्ठा है। वह द्वेषभाव से भरपूर वृत्ति है। इस भयंकर विष का कोई मारण नहीं।''

- फिलॉसफर नित्शे (जर्मन दार्शनिक)

(४) ''जीवन को ऊँचा उठानेवाला उपनिषदों के समान दूसरा कोई अध्ययन का विषय सम्पूर्ण विश्व में नहीं है। इनसे मेरे जीवन को शांति मिली है, इन्हींसे मुझे मृत्यु के समय भी शांति मिलेगी।''

- शॉपनहार (जर्मन दार्शनिक)

(५) ''प्राचीन युग की सभी स्मरणीय वस्तुओं में 'भगवद्गीता' से श्रेष्ठ कोई भी वस्तु नहीं है। गीता के साथ तुलना करने पर जगत का समस्त आधुनिक ज्ञान मुझे तुच्छ लगता है। मैं नित्य प्रातःकाल अपने हृदय और बुद्धि को गीतारूपी पवित्र जल में स्नान कराता हूँ।''

- हेनरी डेविड थोरो (अमेरिकन लेखक व दार्शनिक)

(६) ''धर्म के क्षेत्र में सब राष्ट्र दरिद्र हैं लेकिन भारत इस क्षेत्र में अरबोंपति है।''

- मार्क ट्वेन (अमेरिकन विद्वान)

(७) ''विश्व के किसी भी धर्म ने इतनी वाहियात, अवैज्ञानिक, आपस में विरोधी और अनैतिक बातों का उपदेश नहीं दिया, जितना चर्च ने दिया है।'' **- टॉल्सटॉय (रूसी नैतिक विचारक)**

(८) ''गीता का उपदेश इतना अलौकिक, दिव्य और ऐसा विलक्षण है कि जीवन-पथ पर चलते-चलते अनेक निराश एवं श्रांत पथिकों को इसने शांति, आशा व आश्वासन दिया है और उन्हें सदा के लिए चूर-चूर होकर मिट जाने से बचा लिया है। ठीक उसी प्रकार जैसे इसने अर्जुन को बचाया।'' **- के. ब्राउनिंग**

(९) ''बाइबिल पुराने और दकियानूसी अंधविश्वासों का एक बंडल है।''

- जॉर्ज बर्नार्ड शॉ (सुप्रसिद्ध आइरिश विद्वान)

(१०) ''भारत में पादरियों का धर्म-प्रचार हिन्दू धर्म को मिटाने का खुला षड्यंत्र है, जो कि एक लम्बे अरसे से चला आ रहा है। हिन्दुओं का तो यह धार्मिक कर्तव्य है कि वे ईसाइयों के षड्यंत्र से आत्मरक्षा में अपना तन-मन-धन लगा दें और आज जो हिन्दुओं को लपेटती हुई ईसाइयत की लपट परोक्ष रूप से उनकी ओर बढ़ रही है, उसे यहीं पर बुझा दें। ऐसा करने से ही भारत में धर्म-निरपेक्षता, धार्मिक बंधुत्व तथा सच्चे लोकतंत्र की रक्षा हो सकेगी अन्यथा आजादी को पुनः खतरे की सम्भावना हो सकती है।'' **- पं. श्रीराम शर्मा**

(११) ''हमें गोमांस-भक्षण और शराब पीने की छूट देनेवाला ईसाई धर्म नहीं चाहिए। धर्म-परिवर्तन वह जहर है, जो सत्य और व्यक्ति की जड़ों को खोखला कर देता है। मिशनरियों के प्रभाव से हिन्दू परिवार का विदेशी भाषा, वेशभूषा, रीति-रिवाज के द्वारा विघटन हुआ है। यदि मुझे कानून बनाने का अधिकार होता तो मैं धर्म-परिवर्तन बंद करवा देता। इसे तो मिशनरियों ने एक व्यापार बना लिया है, पर धर्म आत्मा की उन्नति का विषय है। इसे रोटी, कपड़ा या दवाई के बदले में बेचा या बदला नहीं जा सकता।'' **- महात्मा गांधी**

(१२) **''हिन्दू समाज में से एक मुस्लिम या ईसाई बने, इसका मतलब यह नहीं कि एक हिन्दू कम हुआ बल्कि हिन्दू समाज का एक दुश्मन और बढ़ा।''** **- स्वामी विवेकानंद**

तटस्थ एवं निष्पक्ष विद्वानों व विचारकों द्वारा

शेष पृष्ठ १५ पर...

चिदानंदमय देह तुम्हारी...

– पूज्य बापूजी

एक भोला-भाला आदमी संत-महापुरुष के पास जाकर बोला : ''मुझे गुरु बना दो।''

गुरुजी : ''बेटा ! पहले शिष्य तो बन !''

''शिष्य-विष्य नहीं बनना, मुझे गुरु बनाओ। तुम जो भी कहोगे, वह सब करूँगा।''

गुरुजी ने देखा कि यह आज्ञा पालने की तो बात करता है। बोले : ''बेटा ! मैं तेरे को कैसा लगता हूँ ?''

वह लड़का गाय-भैंस चराता था, गड़रिया था। बोला : ''बापजी ! आपके तो बड़े-बड़े बाल हैं, बड़ी-बड़ी जटाएँ हैं। आप तो मुझे ढोर (पशु) जैसे लगते हो।''

बाबा ने देखा, निर्दोष-हृदय तो है पर ढोर चराते-चराते इसकी ढोर-बुद्धि हो गयी है। बोले : ''जाओ, तीर्थयात्रा करो, भिक्षा माँग के खाओ। कहीं तीन दिन से ज्यादा नहीं रहना।''

ऐसा करते-करते सालभर के बाद गुरुपूनम को आया। गुरुजी : ''बेटा ! कैसा लगता हूँ ?''

बोले : ''आप तो बहुत अच्छे आदमी लग रहे हो।''

बाबा समझ गये कि अभी यह अच्छा आदमी हुआ है इसीलिए मैं इसे अच्छा आदमी दिख रहा हूँ। सालभर का और नियम दे दिया। फिर आया।

गुरुजी : ''अब कैसा लगता हूँ ?''

''बाबाजी ! आप ढोर जैसे लगते हो, आप अच्छे आदमी हो, यह मेरी बेवकूफी थी। आप तो देवपुरुष हो, देवपुरुष !''

बाबा ने देखा, इसमें सात्त्विकता आयी है, देवत्व आया है। बाबा ने अब मंत्र दिया। बोले : ''इतना जप करना।''

जप करते-करते उसका अंतःकरण और शुद्ध हुआ, और एकाग्रता हुई। कुछ शास्त्र पढ़ने को गुरुजी ने आदेश दिया। घूमता-घामता, तपस्या, साधन-भजन करता-करता सालभर के बाद आया।

गुरुजी ने पूछा : ''बेटा ! अब मैं कैसा लग रहा हूँ ?''

''गुरुजी ! 'आप ढोर जैसे लगते हैं'- यह मेरी नालायकी थी। 'आप अच्छे इन्सान हैं'- यह भी मेरी मंद मति थी। 'आप देवता हैं'- यह भी मेरी अल्प बुद्धि थी। देवता तो पुण्य का फल भोगकर नीचे आ रहे हैं और आप तो दूसरों के भी पाप-ताप काटकर उनको भगवान से मिला रहे हैं। आप तो भगवान जैसे हैं।''

गुरु ने देखा, अभी इसका भाव भगवदाकार हुआ है। बोले : ''ठीक है। बेटा ! ले, यह वेदांत का शास्त्र। भगवान किसे कहते हैं और जीव किसको कहते हैं, यह पढ़ो। जहाँ ऐसा ज्ञान मिले वहीं रहना और इस ज्ञान का अनुसंधान करना।''

वह उसी ज्ञान का अनुसंधान करता लेकिन ज्ञान का अनुसंधान करते-करते आँखें, मन इधर-उधर जाते तो गुरुमूर्ति को याद करता। गुरुमूर्ति को याद करते-करते गुरु-तत्त्व के साथ तादात्म्य होता और गुरु-तत्त्व के साथ तादात्म्य करते-करते सारे देवी-देवताओं का जो सारस्वरूप है - गुरु-तत्त्व, उसमें उसकी स्थिति होने लगी। आया गुरुपूनम को।

गुरु ने कहा : ''बेटा ! मैं कैसा लगता हूँ ?''

अब तो उसकी आँखें बोल रही हैं, वाणी उठती नहीं । पर गुरुजी को जवाब तो देना है, बोला : ''गुरुजी ! आप पशु लग रहे थे, यह मेरी दुष्ट दृष्टि थी । अच्छे मनुष्य, देवता या भगवान लग रहे थे, यह सारी मेरी अल्प मति थी । आप तो साक्षात् परब्रह्म हैं । भगवान तो कर्मबंधन से भेजते हैं और आप कर्मबंधन को काटते हैं । देवता राजी हो जाता है तो स्वर्ग देता है, भगवान प्रसन्न हो जायें तो वैकुंठ देते हैं लेकिन आप प्रसन्न हो जाते हैं तो अपने आत्मस्वरूप का दान करते हैं । जीव जिससे जीव है, ईश्वर जिससे ईश्वर है, उस परब्रह्म-परमात्मा का स्पर्श और अनुभव करानेवाले आप तो साक्षात् परब्रह्म-परमात्मा हैं ।''

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

आप ब्रह्मा की नाईं हमारे हृदय में सत्कर्मों के संस्कार की सृष्टि करते हो, विष्णु की नाईं हमारे हृदय को सत्कर्मों से, सज्जनता व सदाचार से पोसते हो और शंकर भगवान की नाईं हमारे देहाध्यास व जीवभाव का तुम प्रलय करते हो । शास्त्रकर्ता ऋषि ने इतना कहने के बाद भी संतोष महसूस नहीं किया, उन्होंने कहा :

गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

साक्षात् अठखेलियाँ करता जो निर्गुण-निराकार परब्रह्म है, वही तुम सगुण-साकार रूप लेकर आये हो मेरे कल्याण के लिए ।

इसी प्रकार 'भागवत' में आता है कि जब रहूगण राजा से जड़भरत की भेंट हुई तो उसने जड़भरत को पहले डाँटा, अपमानित किया पर बाद में जब पता चला कि ये कोई महापुरुष हैं तो रहूगण राजा उनको प्रणाम करता है । तब जड़भरत ने बताया : ''**अहं पुरा भरतो नाम राजा...** अजनाभ खंड का नाम जिसके नाम से 'भारतवर्ष' पड़ा, वह मैं भरत था । मैं तपस्या करके तपस्वी तो हो गया लेकिन तत्त्वज्ञानी सद्गुरु का सान्निध्य और आत्मज्ञान न होने से हिरण के चिंतन में फँसकर हिरण बन गया और हिरण में से अभी ब्राह्मण-पुत्र जड़भरत हुआ हूँ ।'' इतना सुनने के बाद भी रहूगण कहता है : ''महाराज ! आप तो साक्षात् परब्रह्म हैं । मेरे कल्याण के लिए ही आपने लीला की है ।'' वह यह नहीं कहता कि 'हिरण में से अभी साधु बने हो । मैं आपको प्रणाम करता हूँ ।' नहीं, 'आप साक्षात् परब्रह्म हैं । मेरे कल्याण के लिए ही हिरण बनने की और ये जड़भरत बनने की आपकी लीला है ।' ऐसी दृढ़ श्रद्धा हुई तब उसको ज्ञान भी तो हो गया !

गुरु को पाना यह तो सौभाग्य है लेकिन उनमें श्रद्धा टिकी रहना यह परम सौभाग्य है । कभी-कभी तो नजदीक रहने से उनमें देहाध्यास दिखेगा । उड़िया बाबा कहते हैं : ''गुरु को शरीर मानना श्रद्धा डगमग कर देगा ।'' गुरु का शरीर तो दिखेगा लेकिन 'शरीर होते हुए भी वे अशरीरी आत्मा हैं' - इस प्रकार का भाव दृढ़ होगा तभी श्रद्धा टिकेगी व ज्ञान की प्राप्ति होगी । ❑

(पृष्ठ १३ से 'सर्व धर्म समान ?' का शेष)

सनातन धर्म एवं अन्य धर्मों के विषय में प्रकट किये गये इन विचारों के अध्ययन के पश्चात् आशा है कि सनातन धर्मावलम्बी स्वयं को हिन्दू कहलाने में गर्व का अनुभव करेंगे ।

सबके प्रति स्नेह व सद्भाव रखना भारतवर्ष की विशेषता है लेकिन 'सर्व धर्म समान' का भाषण देनेवाले लोग भोले-भाले भारतवासियों के दिलोदिमाग में मैकाले की कूटनीतिक शिक्षा-नीति और पाश्चात्य गुलामी के संस्कार भरते हैं । जैसे चपरासी, सचिव, जिलाधीश आदि सब अधिकारी समान नहीं होते; गंगा, यमुना, गोदावरी आदि नदियों का जल और कुएँ, बावली, नाली का जल समान नहीं होता, ऐसे ही सब धर्म समान नहीं होते । ('सर्व धर्म समान ?' पुस्तक से क्रमशः)

सद्गुरु-सा नहीं कोई जगत में !

गुरु अपने में पूर्ण हैं तो अपने आज्ञाकारी और सदाचारी शिष्यों को अपूर्ण कैसे रखेंगे ! गुरुकृपा से तो सहज में उन्नति होती है... मैं तो अपने में बल नहीं मानता हूँ, मेरे गुरु की कृपा के आगे मैं हजार बार नमन करता हूँ !

– पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

गुरु बिन मेरे और न कोय,
जग के नाते सब दिये खोय ॥
गुरु ही मात-पिता अरु बीर[1],
गुरु ही सम्पति जीव सरीर ॥
गुरु ही जाति बरन[2] कुल गोत[3],
जहाँ तहाँ गुरु संगी होत ॥
गुरु ही तीरथ बर्त[4] हमार,
दीन्हें और धरम सब डार[5] ॥
गुरु ही नाम जपौं दिन रैन,
गुरु कूँ ध्यान परम सुख दैन ॥
गुरु के चरन कमल कर बास[6],
और न राखूँ कोई आस ॥

– संत चरनदासजी

मैं अपने गुरु को मिलने से पूर्व सांसारिक जीवन व्यतीत करनेवाला एक साधारण युवक था । गुरु के सम्पर्क में आने के बाद मेरा जीवन पूर्णतः परिवर्तित हो गया । **– स्वामी विवेकानंदजी**

कामिल मुर्शिद (समर्थ सद्गुरु) इन्सानियत और रूहानियत (आध्यात्मिकता) की जिंदा मिसाल होते हैं । इस बात की कल्पना कर सकना असम्भव है कि कोई शिष्य कामिल मुर्शिद की जिंदा अगुवाई के बिना कभी रूहानियत में तरक्की कर सकता है । **– बाबा शेख फरीद**

वैराग्य की प्राप्ति, सत्य का साक्षात्कार तथा आत्मा में संस्थिति गुरुकृपा के बिना सम्भव नहीं ।

– श्री रमण महर्षि

सतगुरु साचा सूरमा, नख सिख[7] मारा पूर ।
बाहर घाव न दीसई, अहं चकनाचूर ॥
बिन सतगुरु बाचै[8] नहीं, फिरि बूड़ै भव माहिं ।
भवसागर के त्रास में, सतगुरु पकरैं बाहिं ॥

– संत कबीरजी

एक गुरु को ही अपना सच्चा परम हितैषी समझकर शक्ति के अनुसार जो भी सेवा हो सके, वह सच्चाई व तत्परता से करते रहना चाहिए । क्योंकि गुरु की ही कृपा से हम जन्म-मृत्यु के चक्कर से छूटकर पूर्ण आनंद की सीमा पर पहुँचते हैं । **– भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज**

गुरु भगवान हैं । उन्होंने स्थान दिया है, उनके ऊपर निर्भर रहना चाहिए । उनकी कृपा और आशीर्वाद निरंतर बरस रहे हैं । उनकी ओर उन्मुख होकर रहना चाहिए । **– माँ आनंदमयी**

जिनके दर्शन, स्पर्श, वचन और चिंतन से हमारे दुर्गुण-दुराचार दूर होते हैं, हमें शांति मिलती है, हमारे में दैवी सम्पत्ति बिना बुलाये आती है और जिनके वचनों से हमारे भीतर की शंकाएँ दूर होती हैं, भीतर से परमात्मा की तरफ गति हो जाती है, ऐसे गुरु से हमारा कल्याण होता है ।

– स्वामी रामसुखदासजी महाराज

गुरु बिना नहिं पार उतरै, करौ नाना भेख[9] ।
रमौ तीरथ बर्त रखौ, होइ पंडित सेख[10] ॥
गुरु बिना नहिं ज्ञान-दीपक, जाय ना अँधियार ।
काम क्रोध मद लोभ माहीं, उरझिया[11] संसार ॥
चरनदास गुरु दया करिकै, दिये मंतर कान ।

१. भाई २. वर्ण ३. गोत्र ४. व्रत ५. डाल/छोड़ देना ६. वास ७. शिखा, चोटी ८. बचता ९. वेश (साधु, संन्यासी आदि) १०. शेख ११. उलझ गया

सहजो घट परगास[१२] हूवा, गयौ सब अज्ञान ॥

– संत सहजोबाई

गुरुदेव परम पद अर्थात् ब्रह्मस्वरूप हैं । प्राण जिस सत्ता के आश्रित हैं, वह सत्ता उनका वास्तविक स्वरूप है । माता, पिता, पुत्र, नारी आदि स्वजनों से विषयरूप विष-फल ही मिलता है किंतु गुरुदेव की दया से सदा के लिए परब्रह्म का साथ मिलता है अर्थात् प्राणी परब्रह्मस्वरूप ही हो जाता है । **– संत रज्जबजी**

श्रद्धा को ज्ञानस्वरूप गुरु से संबंधित करो । साकार गुरु के सहारे निराकार सद्गुरु में श्रद्धा स्थिर करो । गुरु की देह से उपासना शुरू होती है और परम आत्मा में पूर्ण होती है ।

– संत पथिकजी महाराज

सफल जनम मो को गुर कीना ।
दुःख बिसारि सुख अंतर लीना ॥
ग्यान-अंजन मो को गुर दीना ।
राम नाम बिनु जीवन मनिहीना[१३] ॥

– संत नामदेवजी

सद्गुरु माया के गर्त में गिरे हुए (पतित) को पावन करनेवाले 'पतितपावन' हैं । अपने दासों को शरण में रख लेते हैं । अतः 'शरणागतवत्सल' हैं । योग, ध्यान, जप-तप सब कुछ सद्गुरु ही हैं । त्रिगुण उपाधि से रहित गुरुदेव ही निर्गुण परब्रह्म हैं । **– संत पलटू साहिब**

मुर्शिद (गुरु) परमात्मा से अभेद होते हैं । इसलिए मुर्शिद के साथ की अभेदता ही परमात्मा से अभेदता में बदल जाती है । अर्थात् सद्गुरु की दया व मेहर (कृपा) हर प्रकार की करनी से ऊँचा दर्जा रखती है । **– बुल्लेशाहजी**

काल न मिट्या जंजाल न छुट्या, तप करि हूवा न सूरा[१४] ।
कुल का नास करै मति कोई, जै गुर मिलै न पूरा ॥

– जोगी गोरखनाथजी

देहधारी सद्गुरु के सिवा आत्मा का साक्षात् दर्शन (प्रत्यक्ष अनुभव) कभी नहीं होगा । ब्रह्मविचार-विशारद व तात्त्विक विवेचन में कुशल होने पर भी बिना गुरु की भक्ति के आत्मज्ञान प्राप्त करना असम्भव है । ईश्वर से भी गुरु का महत्त्व बड़ा है । **– साँई टेऊँरामजी**

जैसे अँधेरे में दर्पण द्वारा चेहरा देखा नहीं जा सकता, वैसे ही गुरु बिना आत्मज्ञान पाया नहीं जा सकता और आत्मज्ञान बिना यह चौरासी-चक्कर मिटाया नहीं जा सकता । **– संत सुंदरदासजी**

साधो भाई, सतगुरु का नाम सवाया ।
बिना भजन तेरी मुक्ति नाहीं,
नाहक जन्म गँवाया ॥
आत्म से परमात्म जानो, सतगुरु खेल रचाया ।
सार शब्द सतगुरु के घर का,
भेद किसीने ना पाया ॥
सहज-सहज मेहर हुई सतगुरु की,
सार शब्द दरशाया।
कहे रविदास सुनो भाई साधो !
आपे में आप समाया ॥

– संत रविदासजी

महिमा पावन ॐ की

सत्य नाम सद्गुरु से पाया, ओम् ओम् ओम् ॥
सब मंत्रों का प्राण ओम् है, अक्षर अवधान ओम् है ।
यही प्रणव वेदों ने गाया, ओम् ओम् ओम् ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश ओम् में, स्वर्ग भुवर भू-देश ओम् में ।
स्वर निनाद में यही सुनाया, ओम् ओम् ओम् ॥
कारण सूक्ष्म स्थूल ओम् में, अंत मध्य अरु मूल ओम् में ।
इसमें ब्रह्म इसीमें माया, ओम् ओम् ओम् ॥
परम तत्त्व का ज्ञान ओम् में, ब्रह्मशक्ति का ध्यान ओम् में ।
ओंकारमय विश्व दिखाया, ओम् ओम् ओम् ॥
ओम् सच्चिदानंद धाम है, भक्तिद मुक्तिद पूर्णकाम है ।
'पथिक' हृदय में यही समाया, ओम् ओम् ओम् ॥

– संत पथिकजी

१२. हृदय में प्रकाश १३. मणिहीन, प्रकाशहीन
१४. सुरत्व/देवत्व को प्राप्त

पूज्य बापूजी व मित्रसंत

(गतांक से आगे)

(पूज्य बापूजी के पावन संस्मरण उन्हींके शब्दों में)

अनधिकारी के आगे...

जो श्रीकृष्ण और श्रीरामजी का अनुभव था वही अनुभव घाटवाले बाबा का था। साक्षात्कारी पुरुष थे। मैंने उनसे पूछा : ''सुकरात और मंसूर को साक्षात्कार हो गया था तो फिर उन्हें जहर क्यों दिया गया ? सूली पर क्यों चढ़ाया गया ?''

''और क्या करें ? अनधिकारी के आगे अपना अनुभव चिल्लाने लगे। अयोग्य व्यक्ति के आगे तो नहीं बोला जाता है। अपना यह अनुभव तो कोई-कोई विरले होते हैं, जिनकी पात्रता होती है उन्हींके सामने बताया जाता है। 'अनलहक... भगवान एक और व्यापक है। और वह मैं हूँ, मैं ब्रह्म हूँ।'- यह कोई चिल्लाने की चीज थोड़े ही होती है !''

साक्षात्कार करानेवाला उपदेशक आया

घाटवाले बाबा का अभ्यास आत्मविचार का था। उसके सिवा वे कभी उलटी-सीधी बातें नहीं बोलते थे। एक बार मैं उनके साथ बैठा था तब वहाँ कोई भगत आ गया और हमारे साथ बातचीत करने लगा कि 'साक्षात्कार ऐसे नहीं, ऐसे होता है।' उसकी बातें सुनकर मैंने उससे कहा : ''तुम तो हमारे से ज्यादा जानते हो। कुछ सुनाओ।''

कोई नया उपदेशक आ जाता तो घाटवाले और हम - दोनों एक हो जाते थे। उसके सामने शिष्य बन जाते थे। उसको तो शिष्यों की जोड़ी मिल जाती थी। घाटवाले बाबा ने मेरे को इशारे से सहमति दे दी। इससे हम दोनों मौन हो गये। उपदेशक ने अपना उपदेश चालू कर दिया : ''जब मनुष्य साक्षात्कार के नजदीक होता है, जब भगवान के नजदीक होता है तो शास्त्रों ने कहा है कि सहस्रार से एक ऐसी आग-सी निकलती है, जिसमें सारे पाप जलकर भस्म हो जाते हैं। उस वक्त गुरु की कृपा होती है तो साक्षात्कार होता है।''

उसकी बातों से हम दोनों ने उसे भाँप लिया। मैंने बाबा से कहा : ''कितने साल से यहाँ रहते हो तो भी आपको अभी तक साक्षात्कार नहीं हुआ !''

उन्होंने भी विनोद में सहमति देते हुए कहा : ''हाँ, मुझे साक्षात्कार नहीं हुआ। आपको भी नहीं हुआ है। अब हम दोनों को ये करायेंगे।''

मैंने कहा : ''बराबर है।''

हम भक्त बनकर बैठ गये। हमारे भक्त चकित हो गये कि 'साँई और बाबा यह क्या कर रहे हैं !'

उपदेशक ने कहा : ''मैं आप सबको अभी अनुभव कराता हूँ। १० मिनट में साक्षात्कार हो सकता है। आँखें खोलो, बंद करो। अनुभव करो कि मैं कुछ नहीं हूँ, परमात्मा ही सब कुछ है। मेरे हृदय में परमात्मा है...'' आदि सुनी-सुनायी, पढ़ी-पढ़ायी बातें थीं। बड़ा भद्दा लग रहा था। हम दो थे और आठ दूसरे भक्त थे। हम दसों को उसने अपना साक्षात्कार कराया ! फिर पूछा : ''अनुभव हुआ ?''

सब हँसने लगे लेकिन मुझे तो विनोद करना था इसलिए मैंने कहा : ''बहुत बढ़िया अनुभव हुआ।''

''क्या हुआ ?''

''आहा... हा... मुँह में मधुरता आने लगी।''

''ठीक है। तो आप यह अभ्यास चालू रखना, आप सत्पात्र हो।''

''इसके बाद का, आगे का रास्ता ?''

''मैं उदयपुर में रहता हूँ। जब आगे रुकावट

आये तो मेरे पास आ जाना ।''

''वहाँ आने का किराया कौन देगा ?''

''आप चिंता न करो । आप मुझे जहाँ याद करोगे वहाँ मैं मिल लूँगा ।''

उसकी ऐसी बिना सिर-पैर की बातों पर भी हमने उसका अनादर नहीं किया क्योंकि आप अमानी रहना और दूसरे को मान देना चाहिए । मान तो दिया पर बेवकूफ तो बिल्कुल नहीं बन सकते न ! इसलिए अंत में मैंने कह ही दिया : ''मुझे मुँह में स्वाद तो आया था लेकिन जिस समय तुम ध्यान करा रहे थे तब हम दोनों अंगूर खा रहे थे । उन अंगूरों का स्वाद आ रहा था । कोई तुम्हारे आत्मा का स्वाद नहीं मिला । अब कल स्वाद दिलाइयो ।''

''कल तो मैं ऋषिकेश जाऊँगा ।''

उसने देख लिया कि इनके ऊपर तो कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा इसलिए वह रवाना हो गया ।

तात्पर्य यह है कि तुम्हारी चेतसा, तुम्हारी समझ ऐसी होनी चाहिए कि कोई दूसरा व्यक्ति तुम्हारे पर ऐरा-गैरा, मनमाना, मनगढ़ंत रंग चढ़ा न सके । सच्चे ब्रह्मज्ञानी संत ही वास्तव में अज्ञान को हटाकर आत्मज्ञान का प्रकाश दे सकते हैं ।

बाबा कहा करते थे : ''आत्मसाक्षात्कारी पुरुष ब्रह्मलोक तक के जीवों को सहायता करते हैं । उन्हें पता भी नहीं चलने देते कि कोई उन्हें सहायता कर रहा है, ऐसा उनका स्वभाव होता है !''

***

संवत् २०४६, पौष कृष्ण पक्ष दशमी (२२ नवम्बर १९८९, बुधवार) के दिन पूज्य घाटवाले बाबा ब्रह्मलीन हुए । अपने इन प्रिय, दुलारे मित्रसंत को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करने पूज्य बापूजी तुरंत हरिद्वार पहुँच गये थे । आज भी बिरला घाट पर उनका समाधि-मंदिर बाबा की स्मृति दिलाता है । ☐

दीनवत्सल संत कबीरजी

(संत कबीरजी जयंती : २३ जून)

कबीरजी दर्जी का व्यवसाय करते थे । कपड़ा बेचकर होनेवाली आमदनी का आधा हिस्सा माँ नैमा को देकर बचा हिस्सा दरिद्रनारायणों में बाँट के वे आनंदित होते थे । एक दिन कबीरजी बाजार में कपड़ा बेचने गये । एक साधु उनसे आकर बोला : ''जोरों की सर्दी पड़ रही है, ओढ़ने को कपड़ा नहीं है ।''

कबीरजी ने कपड़े का आधा थान फाड़कर देना चाहा मगर साधु ने कहा : ''भाई ! आधे से क्या होगा ? पूरा दे दो ।''

उदारात्मा कबीरजी ने क्षणभर भी सोचे बिना पूरा थान दिया । फिर सोचा, 'आज का सौदा पूरा हुआ मगर नैमा माई अब घर में घुसने न देगी ।'

कबीरजी सब समेटकर घर के बजाय दूसरी दिशा में चल दिये । कोई सेठ वहाँ उनका यह अहैतुकी करुणा-कृपा से भरा दीनवत्सल स्वभाव देख रहा था । वह भावविभोर हो गया कि 'कैसे महापुरुष हैं ये ! जो आप लुटकर भी दूसरे का दिल खुश रखते हैं ।' बड़े श्रद्धाभाव से वह बहुत सारा सीधा-सामान अर्पण करने के लिए बैलगाड़ी पर लादकर कबीरजी के घर पहुँचा । माई ने वह सब लेने से इनकार कर दिया । इतने में कबीरजी आये और सेठ के श्रद्धाभाव को स्वीकार कर वह सारा सामान गरीबों में बाँट दिया । अपने पास कुछ न रखा । कैसी दीनवत्सलता !

महापुरुषों का देना तो देना है ही, परंतु उनका स्वीकार करना भी जरूरतमंदों, गरीबों की सेवा का साधन बन जाता है । उनके हाथों से तो सेवा होती है, परंतु उनकी ज्वलंत प्रेरणा से अन्य कितने ही हाथ गरीबों की सेवा में लग जाते हैं । वर्तमान में ऐसे दीनवत्सल, सबको अपना ही आत्मस्वरूप मानकर सेवा करने की प्रेरणा व संदेश देनेवाले किन्हीं महापुरुष का आपने दर्शन किया है ? यदि किया है तो आप बहुत ही भाग्यशाली हैं । ☐

दो रास्ते...

मुकुंद गुरु युक्तेश्वर गिरिजी के कृपापात्र सत्‌शिष्य थे । गुरु-आश्रम में रहकर गुरुसेवा करते-करते उन्होंने गुरु-महिमा को अच्छी तरह जाना था । गुरुजी ने प्रसन्न होकर उन्हें आश्रम का सारा कार्यभार सौंप दिया ।

इसके १५ दिन बाद ही पूर्व बंगाल से कुमार नाम का एक युवक शिक्षा प्राप्त करने आश्रम आया । वह अपनी प्रखर बुद्धि के प्रभाव से शीघ्र ही गुरुजी का प्रेमपात्र बन गया । एक महीना बीता, गुरुजी ने मुकुंद को आज्ञा दी : ''मुकुंद ! अब कुमार तुम्हारा काम सँभालेगा और तुम अपना समय झाड़ू तथा रसोई आदि के कामों में लगाओ ।''

सच्चा शिष्य किसी भी परिस्थिति में अपने गुरु में दोषबुद्धि नहीं करता । वह किसी सेवा को छोटी या बड़ी नहीं समझता । चाहे झाड़ू-बुहारी की ही सेवा क्यों न मिले, वह शबरी की नाईं अहोभाव से भरकर सेवा करता है । उसके लिए तो बस गुरु-वचन ही सब कुछ होता है। 'रामायण' में भी आता है : **अग्या सम न सुसाहिब सेवा ।** 'गुरुआज्ञा-पालन के समान उत्तम परमात्मा की और कोई सेवा नहीं है ।'

दिखावे के लिए या अपनी बात मनवाने के लिए गुरुभक्ति का आश्रय लेना एक बात है और अंतर्मुख होकर स्वकल्याण के लिए शास्त्रानुसार गुरुभक्ति करना दूसरी बात है। दूसरे प्रकार का लक्ष्यनिष्ठ, आज्ञापालक साधक ही पूर्ण गुरु की पूर्ण कृपा पचाने में सफल हो पाता है । मुकुंद भी उसी रास्ते का पथिक था । वह तो गुरुआज्ञा पाते ही गुरु के प्रति अहोभाव से भरकर तुरंत अपनी सेवा में लग गया । किंतु पदोन्नति पाकर कुमार के अहं को मानो पंख लग गये । वह एक आजकल का स्वतंत्र अर्थात् स्वेच्छाचारी शासक बन गया, जैसा मन में आता वैसा करता । सब उसके शासन से परेशान हो गये । चुप विरोध के रूप में हर कोई मुकुंद से ही सलाह लेने जाता । यह बात कुमार को पसंद नहीं आती थी ।

आखिर ३ हफ्ते बाद उसने गुरुजी के आगे अपने द्वेष का जहर उगला : ''गुरुजी ! आपने मुझे निरीक्षक नियुक्त किया है पर सब लोग मुकुंद के पास जाते हैं, उसीका कहना मानते हैं ।''

तब गुरुजी ने उसे शिष्यत्व की पहचान बताते हुए कहा : ''यही कारण है कि मैंने उसको रसोईघर और तुमको बैठकखाने की सेवा सौंपी, ताकि तुम यह समझ सको कि योग्य शिष्य में केवल सेवा करने की आकांक्षा होती है, शासन करने की नहीं । सेवा अपनी और दूसरों की उन्नति के लिए होती है, न कि अहं सजाने के लिए । तुम मुकुंद की जगह चाहते थे, परंतु तुम अपने गुणों द्वारा उसे सँभाल नहीं सके । अब तुम पुनः रसोइये के सहायक के रूप में सेवा करो ।''

जो अहं जीव को जन्मों से दुःख देता आया है और जन्मों तक दुःखदायी बनेगा उसीसे छुड़ाने हेतु करुणासिंधु गुरुजी उसके अहं पर चोट कर रहे थे परंतु कुमार ने उसे अपने ऊपर ले लिया । मुकुंद से उसका ईर्ष्या-द्वेष बढ़ने लगा । **सद्गुरु द्वारा अमोलक, पतितपावन ज्ञान पाकर भी जो ऐसे सद्गुरु में दोष-दर्शन करता है, गुरुभाइयों से ईर्ष्या-द्वेष करता है, उसके पाप उसे घोर पतन की ओर ले जाते हैं, गुरुद्वाररूपी परम उत्तम सुरक्षा-कवच से बाहर लाने की कोशिश में लग जाते हैं ।** और हुआ भी ऐसा ही ।

एक वर्ष बीता, कुमार ने गुरुजी से गाँव जाने की आज्ञा माँगी । गुरुजी मौन रहे परंतु उनके मौन

द्वारा की गयी अस्वीकृति की अवहेलना कर वह गाँव चला गया । कुछ महीनों बाद वह लौटा तो आकर्षक और तेजस्वी कुमार की जगह एक निस्तेज, जीवन से थका-हारा साधारण किसान सामने था । युक्तेश्वरजी की आँखों में आँसू छलछला आये पर शीघ्र ही उन्होंने अपने को सँभाल लिया और मुकुंद से कहा : ''मुकुंद ! कल ही उसे आश्रम से निकल जाने के लिए कह देना । अब वह आश्रम-जीवन के योग्य नहीं रहा ।''

ऊपर से कठोर दिखनेवाले सद्गुरु के हृदय की कोमलता मुकुंद के सामने पुनः प्रकट हुई : ''मुकुंद ! बुद्धि एक दोधारी तलवार है । चाहो तो छुरी की तरह उससे अज्ञान के फोड़े को चीर डालो या चाहो तो अपनी गर्दन काट डालो । यदि इस लड़के ने मेरा कहा माना होता तो आज कुसंगत में पड़कर इसका पतन नहीं होता । इसने सद्गुरु-संरक्षण का परित्याग कर दिया । अब कठोर संसार ही इसका गुरु रहेगा ।''

संसार में केवल सच्चे सद्गुरु ही निर्दोष प्रेमी होते हैं जिनकी दृष्टि केवल शिष्य के स्वरूप पर होती है । शिष्य को आत्मस्वरूप में जगाने के लिए, युक्तिपूर्वक उसके चित्त को स्थिर करके भगवान की तरफ लगाने के लिए ही वे हर चेष्टा करते हैं । किंतु उस शिष्य के दुर्भाग्य का क्या पार, जो ऐसे सद्गुरु को छोड़कर संसार में सुखी होने की दौड़ में भाग जाता है । उसके लिए तो अंततः जन्म-मरण में भटकने के अलावा और कोई रास्ता नहीं बचता ।

दो रास्ते हैं - एक रास्ता है मुकुंद का, जो गुरुआज्ञा के सुरक्षा-कवच में रहकर परम कल्याण की मंजिल पर सुनिश्चित रूप से पहुँचता है । गुरुकृपा से मुकुंद, स्वामी योगानंदजी के रूप में परिणत हुए । दूसरा रास्ता है कुमार का, जो दुर्लभ मनुष्य-जीवन में सौभाग्य के परम शिखर तक पहुँचकर भी मनमुखता की खाई में गिरकर सुवर्ण-

शेष पृष्ठ २३ पर...

ढूँढ़ो तो जानें

नीचे भारत की १० महान नारियों की विशेषताएँ दी जा रही हैं । इनके आधार पर वर्ग-पहेली में से उन नारियों के नाम खोजिये ।

(१) प्रभुभक्ति से साँप को गले का हार बनानेवाली
(२) अपने सभी पुत्रों को ब्रह्मज्ञान करानेवाली
(३) महान रामभक्त की जननी
(४) यमराज से अपने पति के प्राण वापस लानेवाली
(५) त्रिदेवों को नन्हे बालक बनानेवाली
(६) पति के साथ वनवास जानेवाली पतिव्रता
(७) राजा जनक से शास्त्रार्थ करनेवाली विदुषी
(८) भगवान श्रीकृष्ण से दुःख माँगनेवाली महान नारी
(९) साड़ी में भगवान का प्रवेश अवतार करानेवाली
(१०) माता देवहूति की तरह पुत्र में गुरुबुद्धि का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करनेवाली

म	मी	ष्ट	म	न	त्री	बि	दि	अ	अ	र्थी	ति
द	रि	कुं	च	ई	रं	वि	पः	स	न	तु	घ
र	श	दा	म	हँ	र	सं	सा	ति	म्य	सू	अ
मी	र्णि	ह	ङ्क	त्रि	क्षा	ल	वि	र	अ	श	या
त्रि	रा	श	माँ	व	दा	कु	नि	प्ति	ष्ठ	ता	च्छि
र	हा	बा	पु	म	ध	ली	दा	दी	सी	ग	चे
र	शि	बा	ई	रु	हँ	वे	पा	गु	रो	ती	टी
ती	र्गी	द्रो	रु	प्ति	म	गी	डा	क	कुं	गु	चं
अं	नं	ज	य	भ	ली	के	बा	र	रु	पा	ड
ज	ज	ड़	प	गा	गु	व	न	अं	ल	ल	द्रौ
ता	वृ	ना	सी	ग	र्गी	ति	र्णि	त	स	प	घ
गी	त	भ	चं	र	र्षं	मा	पि	क्र	दी	प	र

गतांक की 'ढूँढ़ो तो जानें' वर्ग-पहेली के उत्तर

श्रीवासः, श्रीपतिः, श्रीमतां, श्रीशः, श्रीनिवासः, श्रीनिधिः, श्रीविभावनः, श्रीधरः, श्रीकरः

बढ़ते दुष्कर्म के लिए जवाबदार अश्लीलता

१५ अप्रैल २०१३ को गांधीनगर, दिल्ली में पाँच साल की बच्ची के साथ हुए बलात्कार के मामले में गुनहगार ने बयान दिया कि 'मैंने मोबाइल पर अश्लील फिल्म देखकर वासना के नशे में यह दुष्कर्म किया था।'

आजकल महिला-वर्ग के ऊपर बढ़ते अत्याचारों का सीधा संबंध इंटरनेट, टीवी चैनलों तथा सिनेमा हॉलों आदि माध्यमों से परोसी जानेवाली अश्लील व नग्नता भरी फिल्मों से है। अनैतिक सामग्रियों से भरी वेबसाइटें तथा अश्लील विज्ञापन व फूहड़ कार्यक्रम दिखानेवाले टीवी चैनल लोगों की मानसिकता पर हमला करते हैं।

लेखक संजय वोरा लिखते हैं कि 'इंटरनेट पर करोड़ों की संख्या में पोर्नोग्राफिक (अश्लील सामग्री से भरी) वेबसाइटें हैं, जिन पर कामोत्तेजक अश्लील विडियो देखे व अपलोड किये जाते हैं। इन्हें देखने से लोगों की कामवासना भड़कती है और वे अपना होश खो बैठते हैं।'

प्रशासन को ऐसी वेबसाइटें व फिल्में तुरंत बंद कर देनी चाहिए। परंतु भारत में जब-जब पोर्नोग्राफी पर प्रतिबंध लगाने की माँग की गयी है तब-तब सरकार ने यही दलील दी है कि 'ऐसी वेबसाइटों का संचालन विदेशों से होने के कारण उनके ऊपर प्रतिबंध लगाना व्यावहारिक रूप में सम्भव नहीं है।' लेकिन यह दलील आधारहीन है। चीन, पाकिस्तान, दक्षिण अमेरिका के गुयाना और इजिप्त - इन देशों में अधिकांश पोर्नोग्राफिक वेबसाइटों पर प्रतिबंध है। दक्षिण कोरिया में तो ८१.१ प्रतिशत लोग इंटरनेट के धारक हैं फिर भी वहाँ की सरकार ने पोर्नोग्राफिक वेबसाइटों पर सख्त प्रतिबंध लगाया है। तो फिर भारत में प्रतिबंध क्यों नहीं लगाया जा सकता ?

(संदर्भ - दिव्य भास्कर, दैनिक जागरण)

नैतिक पतन की इस आँधी को रोकने के लिए प्रतिबंध के साथ ही समाज में संयम-शिक्षा के प्रबंध की भी नितांत आवश्यकता है। 'इन्नोसंटी रिपोर्ट कार्ड' के अनुसार अमेरिका में प्रतिवर्ष ३० लाख किशोर-किशोरियाँ यौन रोगों के शिकार होते हैं। गोनोरिया, जैनिटल हर्पीस और एड्स जैसे यौन रोगों एवं कलह, असंतोष, अशांति, उच्छृंखलता, उद्दंडता, मानसिक तनाव (डिप्रेशन), आत्महत्या आदि से त्रस्त हो के अमेरिका ने अब 'संयम शिक्षा अभियान' चलाया है, जिसके लिए प्रतिवर्ष करोड़ों डॉलर खर्च होते हैं। हालाँकि संतों के मार्गदर्शन, सत्शास्त्रों के ज्ञान के अभाव में वे पूर्ण सफल नहीं हो पा रहे हैं। जबकि भारत तो अध्यात्म का केन्द्र है, भगवद्-अवतारों, संतों-महापुरुषों की अवतरणभूमि है। यहाँ संतों का मार्गदर्शन एवं प्रत्यक्ष सान्निध्य सुलभ है, जिससे संयम की शिक्षा यहाँ शीघ्र फलित होती है। अब देखने की बात यह है कि क्या भारत सरकार देशवासियों को शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक पतन से बचाने के लिए भारत की इस विशेषता का लाभ उठा पायेगी ?

राष्ट्रहितैषी, विश्व-समुदाय के हितचिंतक, दूरद्रष्टा पूज्य बापूजी ने पिछले ४९ वर्षों से 'युवाधन सुरक्षा अभियान' चला रखा है। आश्रम के इस मुख्य अभियान के अंतर्गत संयम-सदाचार के प्रेरणास्रोत एवं जीवन का सर्वांगीण विकास करनेवाले छोटे-से सद्ग्रंथ 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' का २ करोड़ से भी ज्यादा की संख्या में वितरण

हो चुका है और प्रतियोगिता द्वारा देश के ५५ हजार से अधिक विद्यालयों-महाविद्यालयों में ४९,१३,०६८ विद्यार्थियों को संयम-शिक्षा प्रदान की गयी है। यही नहीं, पूज्य बापूजी की प्रेरणा से देश-विदेश में चलाये जा रहे १७,००० से अधिक बाल संस्कार केन्द्रों, सैकड़ों युवा सेवा संघों एवं महिला उत्थान मंडलों द्वारा लाखों-लाखों किशोर-किशोरियों का सर्वांगीण विकास हो रहा है। पूज्य बापूजी द्वारा दिये गये संयम-शिक्षा के पाठ से अनगिनत लोगों का जीवन पतन की खाई में जाने से बचकर बलवान, तेजस्वी एवं प्रतिभावान बनने के रास्ते चल पड़ा है।

संतों-महापुरुषों के वचनों को तोड़-मरोड़कर लोगों को गुमराह करने का जघन्य अपराध तो कइयों द्वारा किया जाता है परंतु उनके संयम-सुशिक्षा के अभियानों को समाज के सामने रखने के अपने नैतिक दायित्व को निभानेवाले तो कोई विरले होते हैं। समाज को ग्रस रहे दुराचार के इस दानव के दमन का उपाय संतों द्वारा बतायी गयी संयम-शिक्षा ही है। तभी नारियों का शील सुरक्षित होगा और वे सम्मान के साथ जी सकेंगी।

जब भी कोई महिला से दुष्कर्म की घटना होती है तब ऐसे लोग विरोध करते हैं जो मनोरंजन के नाम पर अश्लीलता का पोषण करते हैं। पेशे से तो वे अनैतिक समाज का निर्माण करते हैं और दिखावा करते हैं यौन-अपराधों को रोकने के लिए उत्सुक समाज-सुधारक का। ऐसे अपराधियों को पैदा करनेवाले लोगों की मानसिक गुलामी छोड़कर समाज अपराधों को रोकने का मार्गदर्शन देनेवाले धर्मों और संतों की सीख मान के उनके उपदेशों का पालन करेगा तो अपराध निर्मूल हो सकते हैं। धर्म-निरपेक्षता के नाम पर अधर्म का और अनैतिकता का समर्थन करनेवाले किसी भी देश में अपराध कम नहीं हो सकते। सिर्फ कानून बनाने से अपराध बंद हो जाते तो किसी भी देश में कोई भी अपराध नहीं होता। सब देशों में कानून बने हैं फिर भी बड़े-बड़े अपराध बड़ी संख्या में हो रहे हैं, कानून बनानेवाले नेता भी अपराध कर रहे हैं। क्योंकि समाज ने धर्म-निरपेक्षता के नाम पर धर्म का पालन करना त्याग दिया है और आर्थिक लाभ के लिए अधर्म और अनैतिकता को बढ़ानेवाली अश्लीलता को फिल्मों, विज्ञापनों, अखबारों, पत्रिकाओं, चैनलों, पुस्तकों और वेबसाइटों पर स्वीकृति प्रदान की गयी है। एक ओर समाज के अपराधीकरण की प्रवृत्तियाँ तो बढ़ा रहे हैं और दूसरी ओर अपराधों को रोकने की बातें कर रहे हैं। समाज ऐसे दम्भी सुधारकों से सावधान होकर समाज के सच्चे हितैषी संतों के उपदेशों का पालन करेगा तभी समाज का सच्चा सुधार हो सकेगा।

पाश्चात्य दार्शनिक प्लेटो ने उनकी प्रसिद्ध पुस्तक रिपब्लिक में लिखा है, 'प्रपंची, रागद्वेष और कामवासना से जलता हुआ, सत्ता का प्यासा इस पृथ्वी का अहंकारी मनुष्य सामाजिक नियमों से नहीं सुधरेगा, राज्य तंत्र की शिक्षा-प्रणाली से नहीं सुधरेगा परंतु यदि उसमें परलोक का भय जागृत होगा और मनुष्य-जीवन की क्षुद्र मर्यादा से उस पार गूढ़ रहनेवाले अनंत अवतारों में विस्तृत जीवन को वह समझेगा और उसकी दृष्टि विशाल बनेगी तभी मानव-सुधार सम्भव होगा और समाज में नैतिक जीवन का गौरव बढ़ेगा।' **- श्री केशव सेन**

मुख्य सम्पादक, न्यूज पोस्ट समाचार पत्र

(पृष्ठ २१ से 'दो रास्ते...' का शेष)

अवसर खो देता है।

जो किन्हीं भी संत-महापुरुषों के आश्रमों में निवास का सौभाग्य पाये हुए हैं, उन सभी साधुओं-साधकों को मुकुंद से बने स्वामी परमहंस योगानंद और उनके गुरुभाई का यह प्रसंग बार-बार पढ़ना, मनन करना हितकारी होगा। ❑

मनमुखता मिटाओ, मुक्ति पाओ

'श्री योगवासिष्ठ महारामायण' में **वसिष्ठजी कहते हैं : हे रामजी ! जिस शिष्य को गुरु के वचनों में आस्तिक भावना होती है, उसका शीघ्र कल्याण होता है ।**

पूज्य बापूजी : हाँ ! गुरु के वचनों में आस्तिक भावना... गुरुजी ने कहा है, बस ! शबरी भीलन को मतंग ऋषि ने कहा : ''शबरी तू यहीं रहना । तुझे भगवान के पास जाना नहीं है, भगवान तो तेरे आत्मा हैं; फिर भी साकार भगवान तेरे पास आयेंगे ।''

'कब आयेंगे ? आयेंगे कि नहीं आयेंगे ? हम बाट देखें क्या ?' कुछ नहीं पूछा । गुरुजी ने कह दिया, बस ! रोज चढ़ती पेड़ पर, रोज झाँकती, 'गुरुजी ने कहा है न ! रामजी आयेंगे ।' लोग उसे पागल बोलते लेकिन गुरुजी की बात को पकड़कर बैठ गयी । अभी शबरी जितनी आदरणीय हो गयी, उतना रावण नहीं है आदरणीय । क्या खयाल है ? शबरी जितनी तृप्त रही उतना रावण अतृप्त होकर गया । अतृप्त आदमी गुनाही प्रवृत्ति करता है । तृप्त आदमी तो अपने में ही संतुष्ट है । तृप्त व्यक्ति को ही भगवान ने कहा है 'योगी' ।

संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः ।

दृढ़निश्चयी... जैसा मन में आये ऐसा तो कुत्ता भी कर लेता है । जैसा मन में आये ऐसा तो पतंगे भी कर लेते हैं । नहीं, गुरु ने जो पाया है वह हम गुरु की आज्ञा में चलकर ही पा सकते हैं ।

राग और द्वेष महाशत्रु हैं, झूठ-कपट अधोपतन का राजमार्ग है । सच्चाई और समता मुक्ति का मार्ग है । मुक्त होना तो अपने बायें हाथ का खेल है लेकिन वह गलती छोड़ने को तैयार ही नहीं हैं । मनमुखता छोड़ते नहीं इसलिए मुक्ति का अनुभव नहीं होता । मुक्ति का अनुभव नहीं होता तो स्वछंदता हो जाती है । जैसा मन में आया ऐसा ही करोगे तो मन हावी हो जायेगा, इन्द्रियाँ हावी हो जायेंगी, जीव दुर्बल हो जायेगा । जैसे घोड़े की पूँछ पकड़ी तो आदमी दुर्बल हो जायेगा और अगर घोड़े की लगाम पकड़ के उसको अपने अनुसार चलाया तो आदमी बलवान हो जायेगा । ऐसे ही मन पर लगाम आयी तो तुम बलवान हो जाओगे और मन की पूँछ पकड़ी तो मन घसीटकर ले जायेगा । अब पूँछ पकड़ो या लगाम, मर्जी तुम्हारी है ।

गुरुजी बता रहे हैं : ''बेटा ! तूने पूँछ पकड़ी है, अब इधर आ न, तेरे को लगाम पकड़ा दूँ ।''

बोले : ''नहीं पकड़ में आ रही है ।''

इसलिए मेरे कहने में आ जा बस, हो गया । **कोई भी काम करें, गुरुजी को अच्छा लगेगा कि नहीं लगेगा ? अच्छा लगे वह करो, अच्छा नहीं लगेगा तो नहीं करो तो आ जायेगी लगाम । देर थोड़े ही है !** गुरुजी को यह बात पसंद है कि नहीं है ? हम मनमुख हो जायें, भटकू हों, आवारा हों तो गुरुजी को अच्छा लगेगा क्या ? नहीं लगेगा । बस हो गया । गुरु की आज्ञा में रहेंगे तो हमारी उन्नति देखकर गुरुजी खुश होंगे कि नहीं होंगे ? होंगे तो बस !

ऐसे कौन-से गुरु हैं जो शिष्य की उन्नति देखकर खुश न हों और ऐसे कौन-से गुरु हैं जो शिष्य आवारा हो जाय और वे खुश हो जायें ? होंगे ? नहीं । तो **गुरु की प्रसन्नता निमित्त है, भलाई तो अपनी होती है ।** गुरुजी प्रसन्न रहें, इसलिए अपन ऐसा नहीं करें । इसमें गुरुजी को फायदा नहीं है, अपने को ही फायदा है । मैं जो गुरु की आज्ञा में रहा... गुरुजी थोड़े ही बोलते थे

कि तुम बाल कटवाओ तो मेरे से पूछो। ऐसा गुरुजी ने कभी नहीं कहा। कई लोग कटवाते थे। ऐसा अब तुम नहीं पूछना बाल कटवाने के लिए, वह पूछना तो बनावटी होगा। बस हृदय से मनमुखता छोड़ने के लिए तैयार हो जाओ। भाषणबाजी तो कोई भी कर ले। पुजवाने की वासनावाले घुस जाते हैं गुरु की जगह पर, फिर ठुस्स भी हो जाते हैं बेचारे। गुरु का मतलब यह नहीं कि उपदेशक बन गये, चमचे-चमचियाँ पीछे घूमते रहे। यह गुरु का काम नहीं है। गुरु का काम है लघु को गुरु बना दें। विषय-विकारों में गिरे हुए जीवों को भगवद्-आनंद में, भगवद्रस में, भगवत्प्रीति में पहुँचा दें।

जो अपने गुरु के नियंत्रण में नहीं रहता, उसका मन परमानंद को नहीं पायेगा। ऐसा नहीं कि गुरुजी के सामने बैठे रहना है। गुरुजी नैनीताल में हों, चाहे कहीं भी सत्संग कर रहे हों लेकिन गुरुजी के नियंत्रण में अपने को रखकर हम सात साल रहे। कभी कहीं जाते तो गुरुजी की आज्ञा लेकर जाते। चौरासी लाख जन्मों की, मन की, इन्द्रियों की वासना से जीव भटकता रहता है, इसलिए गुरु की जरूरत पड़ी। तो गुरु एक ऐसा सहारा मिल गया कि अब कहीं भी जाओ तो गुरुजी की तो आज्ञा लेंगे। तो आज्ञा लेना ठीक है कि नहीं ? जैसा मन में आये ऐसा चल दिये तो एक जन्म में क्या, दस जन्म में भी उद्धार होनेवाला नहीं है।

गुरुकृपा हि केवलं शिष्यस्य परं मंगलम्।

गुरु का सान्निध्य और गुरु की आज्ञा हमें गुरु बना देती है। ❑

सुखमय जीवन की अनमोल युक्तियाँ

- पूज्य बापूजी

सुबह जल्दी उठने की युक्ति

यदि सुबह आपकी नींद नहीं खुलती है अथवा अपने से नहीं उठ सकते हैं तो रात को सोते समय अपनी परछाईं को ३ बार बोल दो कि 'मुझे ३ से ५ बजे के बीच प्राणायाम करने हैं, तुम मुझे ४ बजे जगा देना।' है तो तुम्हारी छाया लेकिन कहोगे तो नींद खुल जायेगी। फिर उस समय आलस्य नहीं करना। अपने कहे अनुसार छाया ने कर दिया तो उसका फायदा उठाओ।

वैर को प्रीत में बदलने की युक्ति

जिसके साथ आपका वैर है, द्वेष है या तुम पर नाराज है, **उसके गुण भी होंगे।** हमारी दृष्टि में जब दोष होता है न, तो उसमें दोष-ही-दोष दिखेंगे और हमारी दृष्टि में गुण होगा तो गुण दिखेंगे लेकिन गुण-दोष सबमें मिश्रित हैं, किसीमें दोष ज्यादा, किसीमें गुण ज्यादा। तो जिससे भी तुम्हारी अनबन हो गयी है, **उसका कोई-न-कोई गुण याद करके सुबह-शाम मन-ही-मन उसकी प्रदक्षिणा करो** और उसको यह बोलो कि 'आप अच्छे हो, भले हो, सज्जन हो। आप में ये गुण भी हैं, ये गुण भी हैं, बाकी थोड़ा-बहुत उन्नीस-बीस है तो मेरा नजरिया भी बदल जाय और आपका भी भाव बदल जाय, आपका भी यह दोष है तो निकल जाय।'

उसके अंदर अच्छाई, भलाई व सज्जनता छुपी है। इस प्रकार की भावना से आपका वैर मिटेगा और उसकी सज्जनता और अच्छाई जगाने का पुण्य भी आपको मिलेगा।

जैसे गुरु शिष्य का मंगल चाहते हैं फिर डाँटते भी हैं, पुचकारते भी हैं, दंडित भी कर देते हैं लेकिन चाहते मंगल हैं। ऐसे ही जिससे आपका विरोध है, आप उसका मंगल चाहकर उसकी प्रदक्षिणा करो, उसको रू-बरू नहीं बोल सकते हो तो मन-ही-मन बोलो। इससे आपका हृदय पवित्र हो जायेगा और वह कितना भी तुम्हारे प्रति नफरत करता हो पर तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकेगा। कैसा जादू ! जगजीत प्रज्ञा है, यह जगत को जीतनेवाली बुद्धि है। ❑

ब्रह्मचर्य का रहस्य

(गतांक से आगे)

एक बार ऋषि दयानंद से किसीने पूछा : ''आपको कामदेव सताता है या नहीं ?''

उन्होंने उत्तर दिया : ''हाँ, वह आता है परंतु उसे मेरे मकान के बाहर ही खड़े रहना पड़ता है क्योंकि वह मुझे कभी खाली ही नहीं पाता ।''

ऋषि दयानंद संयम, साधन, भक्ति, ज्ञान बढ़ानेवाले कार्यों में इतने व्यस्त रहते थे कि उन्हें सामान्य बातों के लिए फुर्सत ही नहीं थी । यही उनके ब्रह्मचर्य का रहस्य था ।

हे युवानो ! अपने जीवन का एक क्षण भी व्यर्थता में न गँवाओ । स्वयं को किसी-न-किसी ऊँची सत्प्रवृत्ति में संलग्न रखो । व्यस्त रहने की आदत डालो । **'खाली दिमाग, शैतान का घर ।'** निठल्ले व्यक्ति को ही विकार अधिक सताते हैं । आप अपने विचारों को पवित्र, सात्त्विक व उच्च बनाओ । विचारों की उच्चता बढ़ाकर आप अपनी आंतरिक दशा को परिवर्तित कर सकते हो । उच्च व सात्त्विक विचारों के रहते हुए राजसी एवं हलके विचारों और कर्मों की दाल नहीं गलेगी । सात्त्विक व पवित्र विचार ही ब्रह्मचर्य का आधार हैं ।

विवाहित युवक-युवतियों के लिए

प्रत्येक नवविवाहित युवक-युवती को डॉ. कोवन की ये पंक्तियाँ अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए : 'नयी शादी करके पुरुष तथा स्त्री विषय-भोग की दलदल में जा धँसते हैं । विवाह के प्रारम्भ के दिन तो मानो व्यभिचार के दिन होते हैं । उन दिनों उनकी हालत से ऐसा जान पड़ता है, जैसे विवाह जैसी उच्च तथा पवित्र व्यवस्था भी मनुष्य को पशु बनाने के लिए ही गढ़ी गयी हो ।

ऐ नवविवाहित दम्पति ! क्या तुम समझते हो कि यह उचित है ? क्या विवाह के पर्दे में छिपे इस व्यभिचार से तुम्हें शांति, बल तथा स्थायी संतोष मिल सकते हैं ? क्या इस व्यभिचार के लिए छुट्टी पाकर तुममें प्रेम का पवित्र भाव बना रह सकता है ?

देखो, अपने को धोखा मत दो । विषय-वासना में इस प्रकार पड़ जाने से तुम्हारे शरीर और अंतरात्मा, दोनों गिरते हैं । ...और प्रेम ! यह बात गाँठ बाँध लो, प्रेम तो उन लोगों में हो ही नहीं सकता, जो संयमहीन जीवन व्यतीत करते हैं ।

नयी शादी के बाद लोग विषयों में बह जाते हैं परंतु इस अंधेपन में पति-पत्नी का भविष्य, उनका आनंद, बल, प्रेम खतरे में पड़ जाता है । संयमहीन जीवन से कभी प्रेम नहीं उपजता । संयम को तोड़ने पर सदा घृणा उत्पन्न होती है और ज्यों-ज्यों जीवन में संयमहीनता बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों पति-पत्नी का हृदय एक-दूसरे से दूर होने लगता है ।

प्रत्येक पुरुष तथा स्त्री को यह बात समझ लेनी चाहिए कि विवाहित होकर विषय-वासना का शिकार बन जाना शरीर, मन तथा अंतरात्मा के लिए वैसा ही घातक है जैसा व्यभिचार । यदि पति अपनी इच्छा को अथवा कल्पित इच्छा को पूर्ण करना अपना वैवाहिक अधिकार समझता है और स्त्री केवल पति से डरकर उसकी इच्छा को पूर्ण करती है तो परिणाम वैसा ही घातक होता है जैसा हस्तमैथुन का ।' (क्रमशः)

सद्गुरु-स्तुति

हे सद्गुरु तुम परम हितैषी,
तुमसे ही कल्याण हमारा।
तुम्हें न पाकर व्यर्थ चला जाता,
मानव का जीवन सारा॥
परम सत्य, हे नित्य युक्त,
हे शुद्ध बुद्ध, हे मुक्त महात्मन्!
मन दे पाये जो तुमको ही,
उसका सफल हुआ मानव तन।
देव तुम्हारे दर्शन करके,
लग जाता तुममें जिसका मन।
तुम्हें छोड़कर कहीं न जाता,
तुम्हीं दिखते हो प्रियतम धन।
बुद्धियोग जब तुम देते हो,
तब होता है जीवन-दर्शन।
ज्ञानदृष्टि तुमसे ही खुलती,
तभी सुलभ होते आनंदघन।
कितनों ने ही सीख लिया,
मरकर जीने का मंत्र तुम्हारा॥ हे सद्गुरु तुम...
नित्य अनेकों मुरझाये मुख,
खिलते देखा तुमको पाकर।
सदा पीड़ितों की पुकार पर,
रहे दौड़ते कष्ट उठाकर।
जो न कहीं सुख देख मिला वह,
देखा श्रीचरणों में आकर।
जो न कभी हो सका वही,
हो गया तुम्हारा ध्यान लगाकर।
अभय कर दिया उसको जिसने,
कभी हृदय से तुम्हें पुकारा॥ हे सद्गुरु तुम...
तुमको मैंने दीनों-दलितों की,
कुटिया में जाते देखा।
अपनी दिव्य शक्ति से उनके,
भीषण कष्ट मिटाते देखा।
कहीं अश्रु से गीली पलकें,
स्वामिन् तुम्हें सुखाते देखा।
जो कि तुम्हें करना था उसमें,
कभी न देर लगाते देखा।
तुमने उसकी सुनी दयामय,
जिसको सबने ही दुत्कारा॥ हे सद्गुरु तुम...

(क्रमशः)

– संत पथिकजी महाराज

गुरुनाम की मस्ती से...

गुरुनाम की मस्ती से,
आत्मभाव की हस्ती से,
सद्भाव गुणों की बस्ती से,
प्रभुप्रेम से महके उर आँगन।
गुरुज्ञान श्रद्धा-भक्ति से,
परम चेतन आत्मशक्ति से,
प्रभु ध्यान की आसक्ति से,
द्रवित हृदय हो, सजल नयन।
तत्त्वचिंतन परम शांति से,
अनासक्ति व चित्त विश्रांति से,
भय शोक रहित क्रांति से,
पावन हो सहज सरल जीवन।
सद्गुरु दर्शन प्रभुप्रीति से,
सात्त्विक मन स्वतृप्ति से,
गति आत्मरति-संतुष्टि से,
हो रसमय, मधुमय चितवन।
सद्भाव स्नेह-प्यार से,
क्षमा धैर्य सुविचार से,
समता सेवा परोपकार से,
'साक्षी' हो मन मस्त मगन।
नित आत्मअमी रसधार से,
चैतन्य ब्रह्म, सुख सागर से,
इक ईश्वर करुणाधार से,
छलके आनंद, हो चैन अमन।

– जानकी चंदनानी, अहमदाबाद □

सत्संग करे सुख-दुःख से पार

- पूज्य बापूजी

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ।

सुखद अवस्था आये चाहे दुःखद अवस्था आये, जो सुख और दुःख से परे मुझ साक्षी में, मुझ आत्मा में विश्रांति पा लेता है उस योगी की बुद्धि परम बुद्धि है। जो निगुरे लोग होते हैं, जिनकी अल्प मति होती है, जिनके पास सत्संग नहीं है, ऐसे लोग शरीर बीमार होता है तो मान लेते हैं कि 'मैं बीमार हूँ' और बीमारी गहरी होती जाती है। मन दुःखी होता है तो मानते हैं, 'मैं दुःखी हूँ' और दुःख गहरा हो जाता है। दुःख-सुख, बीमारी तो आकर चले जाते हैं लेकिन अपने में बीमारी, सुख और दुःख का अध्यारोप करनेवाले व्यक्ति मरने के बाद भी प्रेतात्मा होकर भटकते रहते हैं।

वे लोग धनभागी हैं जिन्हें सत्संग मिलता है! वे शरीर की बीमारी को अपनी बीमारी नहीं मानते। मन के दुःख को अपना दुःख नहीं मानते। जैसे 'मैं गजरे को जानता हूँ तो मैं गजरा नहीं हूँ।' ऐसे ही 'मैं दुःख को जानता हूँ तो मैं दुःखी नहीं हूँ। मैं बीमारी को जानता हूँ तो मैं बीमार नहीं हूँ। मैं उससे पृथक् हूँ। मैं चैतन्य हूँ, नित्य हूँ। बीमारी, दुःख आने-जानेवाले हैं। ॐ... ॐ... ॐ...'

एक घटित घटना है। जयदयाल कसेरा, कोलकाता में बड़े सेठ हो गये। वे समीक्षा कर रहे थे अपने चित्त की दशा की। एक दिन उनके यहाँ थानेदार का फोन आया : ''आपके इकलौते लड़के का भयानक एक्सीडेंट हो गया है।''

सेठ ने पूछा : ''अच्छा ! चलो, जो हरि इच्छा। बेटा जिंदा है कि मर गया ?''

थानेदार चौंककर बोला : ''आप पिता होकर इतने कठोर वचन बोल रहे हैं !''

''मैं इसलिए पूछ रहा हूँ कि लड़का मर गया हो तो हम उसकी श्मशान यात्रा की व्यवस्था करें और जिंदा हो तो इलाज की व्यवस्था करें।''

''आप सचमुच के पिता हो या गोद लिया था लड़के को ?''

''थानेदार ! मैं सगा बाप हूँ इसीलिए उसकी अच्छी उन्नति हो ऐसा कर रहा हूँ। उसे चोट लगी हो और मैं अपने दिल को चोट पहुँचाकर उसका उपचार करवाऊँगा तो वह ठीक न होगा। यदि वह मर गया है और मैं रोता रहूँगा तो भी उसकी यात्रा ठीक नहीं होगी। अगर वह मर गया है तो मैं श्मशान यात्रा की तैयारी करूँ, मित्रों को फोन करूँ और बुलवाऊँ। अगर जिंदा है तो उचित उपचार के लिए अच्छे चिकित्सालय में दाखिल करवाऊँ। इसमें रोने या दुःखी होने की क्या बात है ? उस परमात्मा को जो अच्छा लगता है वही तो वह करता है और शायद इसीमें मेरा और मेरे बच्चे का कल्याण होगा। वह मेरा मोह तोड़ना चाहता होगा और मेरे बेटे को अभी आगे की यात्रा करना बाकी रहा होगा तो मैं फरियाद करनेवाला कौन होता हूँ हे थानेदार !''

''सेठजी ! आपके बेटे का अस्पताल आते-आते दम टूट गया है।''

''चलो, अब कौन-से अस्पताल में है ?''

''सिविल अस्पताल।''

''अच्छा, मैं पहुँचता हूँ।''

वे पहुँचे और बेटे के मुँह में तुलसी के पत्ते डाले, तुलसी की माला पहना दी, तुलसी की कुछ सूखी लकड़ियाँ ले आये थे बेटे की चिता पर रखने के लिए, जिससे उसकी सद्गति सुनिश्चित हो।

'कहीं भी कोई मर जाय तो तुलसी की सूखी छोटी-छोटी लकड़ियाँ उसके अग्नि-संस्कार में उपयोग में लायी जायें तो उसको नीच योनि

अथवा नारकीय यातनाएँ नहीं सहनी पड़तीं ।' - यह शास्त्र-सिद्धांत सुन रखा था । उन्होंने बेटे के शव पर तुलसीमिश्रित जल छाँटा, जो कुछ शास्त्रीय विधि सत्संग में सुनी हुई थी, वह सब की । बेटे के जीवात्मा को सम्बोधित करते हुए बोले, ''जैसे जल में बुलबुले पैदा हुए और जल में ही लीन... ऐसे ही पंचभौतिक शरीर पाँच भूतों में लीन... ! कोई मरता नहीं, तू जानता ही है । तू अमर है, चैतन्य है । आत्मा को तो परमात्मा भी नहीं मारते और शरीर को तो परमात्मा भी नहीं रख सकते ।' फिर सेठजी कीर्तन करने लगे, ''गोविंद हरे, गोपाल हरे, जय-जय प्रभु दीनदयाल हरे । सुखधाम हरे, आत्माराम हरे, जय-जय प्रभु दीनदयाल हरे...''

डॉक्टर दौड़ता हुआ आया, बोला : ''सेठजी ! यह क्या कर रहे हो ? यह अस्पताल है !''

सेठजी बोले : ''अस्पताल है तो कोलकाता में है न ! रावण की लंका तो नहीं है, विदेश तो नहीं है ! रावण के समय लंका में भगवान का नाम लेना मना था, अभी तो वहाँ भी ले रहे हैं । भगवान के नाम का कीर्तन करेंगे तो उसके जीवात्मा की ऊँची गति होगी । गोविंद, गोपाल के धाम में जायेगा । और भी जो अस्पताल में मरकर भटक रहे हैं, दूसरों को अपनी जमात में खींचते हैं, उनकी भी सद्‌गति होगी । प्रेम से बोलो, **'गोविंद हरे, गोपाल हरे, जय-जय प्रभु दीनदयाल हरे । सुखधाम हरे, आत्माराम हरे, जय-जय प्रभु दीनदयाल हरे । हरि ॐ... हरि ॐ...''**

दुःखद घटना तो घटी है लेकिन दुःखद घटना को भी भक्तियोग, ज्ञानयोग बनाने की कला थी सेठ में । बेटे की सद्‌गति हुई । हमारा परमात्मा कोई कंगाल थोड़े ही है जो हमें एक ही अवस्था में, एक ही शरीर में और एक ही परिस्थिति में रख दे । उसके पास तो ८४-८४ लाख चोले हैं अपने प्यारे बच्चों के लिए तथा करोड़ों-करोड़ों अवस्थाएँ भी हैं, जिनसे वह गुजारता-गुजारता अंत में हमको परमात्मस्वभाव में जागृत करता है । □

छिपा परमेश्वर

गुरु सत्य हैं । गुरु पूर्ण हैं । गुरु की महिमा रहस्यमय और अति दिव्य है । वे मानव को नया जन्म देते हैं । उनके बारे में कहा गया है :

मनुष्यदेहमास्थाय छन्नास्ते परमेश्वरः ।

'खुद परमेश्वर ही गुरुरूप मनुष्य-देह धारण करके छिपकर रहता है ।'

गुरु की यह व्याख्या है - 'जो शक्तिपात द्वारा अंतर्शक्ति को जगाते हैं, मनुष्य-शरीर में परमेश्वरीय शक्ति को संचारित कर देते हैं, जो योग की शिक्षा, ज्ञान की मस्ती, भक्ति का प्रेम, कर्म में निष्कामता और जीते-जी मोक्ष देते हैं, वे परम गुरु शिव से अभिन्नरूप हैं । वे ही राम, शक्ति, गणपति और वे गुरु ही माता-पिता हैं ।'

ऐसे गुरु का कितना उपकार, कितना अनुग्रह, कितनी दया है ! ऐसे गुरु समान कौन मित्र, कौन प्रेमी, कौन माँ और कौन देवता है ? जिन गुरु ने आपके कुल, जाति, कर्म-अकर्म, गुण-दोष आदि देखे बगैर आपको अपना लिया, उन गुरु की महिमा कौन गा सकता है ! श्रीगुरु में जिसकी प्रह्लाद जैसी दृढ़ आस्तिक बुद्धि होती है, उसके अंदर परमेश्वर का प्रकट होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।

तुम डरो मत ! निर्भय होकर गुरु का आश्रय लो । गुरु पर भरोसा रखो । एक आशा, एक विश्वास, एक बल श्रीगुरु का लेकर रहो । गुरु में पूर्ण आत्मसमर्पण करके गुरुभाव को अपनाओ ।'

- स्वामी श्री मुक्तानंदजी

('चितशक्ति विलास' से साभार) □

सरल प्रयोग

बालकों को २ ग्राम मुलेठी और शंखपुष्पी को दूध के साथ पिलाने से उनकी वाक्‌शक्ति एवं रूप-सम्पत्ति के साथ-साथ आयु, बुद्धि और कांति की भी वृद्धि होती है ।

तस्वीर बनी इत्र का झरना

महाराष्ट्र में प्रथा है कि यहाँ हर पूजा आम के पत्ते, इत्र, हल्दी, कुम्कुम, पंचामृत आदि के साथ की जाती है। दिनांक १३ मई २०१२ को मेरे घर पूज्य बापूजी के करकमलों से प्रज्वलित ज्योत का सात दिवसीय ज्योत-उत्सव होनेवाला था।

ज्योत के आने का समय हो गया था। सारी तैयारियाँ हो गयी थीं, केवल इत्र लाना बाकी था। मैं तो सोच में पड़ गयी। तभी पड़ोस की साधिका बहन आयी। प्रवेश करते ही उन्हें सुगंध आने लगी जैसे मैंने इत्र छाँटा हो । किंतु इत्र तो था ही नहीं ! खोजते-खोजते पता चला कि वह दिव्य सुगंध पूज्य बापूजी के श्रीचित्र से आ रही है। अचानक उन बहन ने बापूजी के श्रीचित्र पर हाथ घुमाया। आश्चर्य ! हाथ गीला हो गया और हाथ से वही दिव्य सुगंध आने लगी। हम सबकी आँखों से भाव-धाराएँ बह चलीं । इस अलौकिक इत्र को सात दिनों तक हमने रुई से एकत्रित किया । सात दिनों तक जो श्रद्धालु भजन-कीर्तन, श्री आशारामायण पाठ का लाभ लेने आते रहे, उन्हें भी इस दिव्य सुगंध का अनुभव हुआ।

इस अद्भुत लीला के कुछ महीनों बाद मैं पूज्य बापूजी के दर्शन-सत्संग के लिए गोधरा (गुज.) गयी। वहाँ जब बापूजी रेलगाड़ी पर दर्शन देने आये तो मेरे कुछ बोलने से पहले ही उन्होंने प्रेमवर्षा कर दी : ''तू अकेली-अकेली सुगंध लेगी, मुझे नहीं देगी ?'' ये वचन सुनकर कुछ क्षणों के लिए तो मैं मौन हो गयी। आँखों से प्रेमाश्रुओं की धार बह चली । कुछ सँभलकर मैंने गुरुदेव के श्रीचरणों में इत्र अर्पित करते हुए कहा : ''तेरा तुझको देत हैं, क्या लागत है मोर।''

पड़ोसी साधिका बहन को काफी दिनों से कान में दर्द हो रहा था। दवा भी काम नहीं कर रही थी। उन्होंने श्रद्धापूर्वक इस इत्र की कुछ बूँदें कान में डालीं तो महीनों का दर्द एक बार में ठीक हो गया ! अब तो हर पर्व-त्यौहार पर इत्र की धार बह चलती है। इसके कई लोग साक्षी हैं। कैसी करुणा-कृपा है गुरुदेव की ! पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में मेरे शत-शत नमन !

– विमल धूमनवार, वणी (महा.) मो. : ८९७५१८१७६४

बापूजी की मुस्कान हर लेती मुसीबतें

मेरी धर्मपत्नी की तबीयत खराब थी। उसकी बच्चेदानी पीठ की तरफ चली गयी थी और उसमें २.५ किलो की रसौली (cyst) भी थी। यहाँ के प्रसिद्ध मिशन अस्पताल के डॉक्टरों ने कहा कि ''केस बहुत गम्भीर है। मरीज को बचाना बहुत ही मुश्किल है।'' उसी दौरान मैं पूज्य बापूजी से मिला और अपनी परेशानी बतायी कि ''मेरे पास पैसे भी नहीं हैं...'' तो बापूजी ने मुस्करा के कहा : ''तू चिंता क्यों करता है ? पैसे मैं दूँगा। सब ठीक हो जायेगा।'' मैंने गुरुदेव की आज्ञा पाकर पत्नी को ऑपरेशन के लिए भर्ती कर दिया। मेरे बैंक के खाते में मात्र ३ हजार रुपये थे पर जब मैं ए.टी.एम. में गया तो ६० हजार रुपये देख दंग रह गया ! वे पैसे महँगाई भत्ते आदि के जो कटते थे और सेवानिवृत्त होने पर मिले थे, उसकी मुझे याद ही नहीं थी। मैं खुशी से भावविभोर हो गया।

१० डॉक्टरों की टीम ने ऑपरेशन में भाग लिया था। ऑपरेशन के दौरान मेरी पत्नी को बापूजी ने सूक्ष्मरूप में दर्शन भी दिये थे । गुरुकृपा से ऑपरेशन सफल हुआ। पत्नी की जान बच गयी। वरिष्ठ ईसाई डॉक्टर ने ऑपरेशन-कक्ष से बाहर आकर पूछा कि ''कोई सफेद दाढ़ीवाले बाबाजी बिस्तर के चारों तरफ घूम रहे थे। वे कौन थे ? ऐसा चमत्कार और ऑपरेशन मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा !'' मैंने कहा : ''वे मेरे सद्गुरुदेव पूज्य आशारामजी बापू थे। यह उन्हींका चमत्कार है।''

– अनिल शर्मा, कुल्लू (हि.प्र.) मो. : ९४१८४५५४८९

...तो मैं हत्यारा, जुआरी व शराबी ही होता

मंत्रदीक्षा के पहले ऐसा कोई व्यसन नहीं था जो मेरे जीवन में न हो । मैं रोज सिगरेट, शराब-कबाब का सेवन करता था । सन् १९८८ में कांदिवली (मुंबई) में पूज्य बापूजी का सत्संग था । मित्र के आग्रह से मैं वहाँ गया । वहाँ पहली बार मैंने पूज्य बापूजी के दर्शन किये पर बिना श्रद्धा के, किंतु उनकी करुणा तो देखो ! शाम को घर पहुँचा तो मुझे न शराब, न ही सिगरेट पीने की इच्छा हुई । मुझे लगा कि जिनके दर्शनमात्र से मेरे सब व्यसन छूट गये उनकी शरण में जाना चाहिए । अगले दिन घाटकोपर में सत्संग था । मैंने वहाँ बड़ी श्रद्धा से दर्शन-सत्संग का लाभ लिया । उसके बाद तो मेरा पूरा जीवन ही बदल गया । सदाचरण मेरे जीवन में आ गया ।

बापूजी को पाकर मेरी तरह लाखों-करोड़ों का जीवन बदला है । यदि मुझे बापूजी नहीं मिलते तो मैं हत्यारा, जुआरी व शराबी ही होता और न जाने आज कहाँ, किस हालत में होता !

यह बापूजी की कृपा का ही प्रताप है कि अब मेरा मन सेवा-साधना में रम रहा है । और अभी मैं विक्रोली के 'ऋषि प्रसाद सेवा मंडल' का प्रमुख हूँ । **'ऋषि प्रसाद'** पढ़कर लोगों का विवेक जगता है, जीवन का वास्तविक उद्देश्य समझ में आता है, उलझे सवालों का हल मिलता है तथा बापूजी जैसे परम हितैषी महापुरुष के प्रति श्रद्धा जागृत होती है, जिससे वे सत्संग में आकर बापूजी से दीक्षा ले लेते हैं । इसलिए मैं **'ऋषि प्रसाद'** सेवा का बड़ा सम्मान करता हूँ और जब तक मेरा जीवन रहेगा, इस सेवा को निष्ठा से करता रहूँगा ।

- दिनेश जयसवाल, विक्रोली, मुंबई
मो. : ९८२१२८५१२७

गर्मियों में विशेष लाभकारी

आँवला रस

आँवला रस वार्धक्य निवृत्ति व यौवन-सुरक्षा करनेवाला तथा पित्त व वायु द्वारा होनेवाली ११२ बीमारियों को मार भगानेवाला सर्वश्रेष्ठ रसायन है । इसके रस से शरीर में शीघ्र ही शक्ति, स्फूर्ति, शीतलता व ताजगी का संचार होता है । यह अस्थियाँ, दाँत व बालों की जड़ों को मजबूत बनाता है । आँवला रस रक्त व शुक्रधातु की वृद्धि करता है । इसके नियमित सेवन से नेत्रज्योति बढ़ती है तथा मस्तिष्क व हृदय को ताजगी, ठंडक व शक्ति मिलती है । यह वृद्धावस्था को दूर रख चिरयौवन व दीर्घायुष्य प्रदान करता है । आँवला रस आँखों व पेशाब की जलन, अम्लपित्त, श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, बवासीर आदि पित्तजन्य अनेक विकारों को दूर करता है ।

विशेष प्रयोग : ✻ आँवले के रस में २ ग्राम अश्वगंधा चूर्ण व मिश्री मिला के लेने से शरीरपुष्टि, वीर्यवृद्धि एवं वंध्यत्व में लाभ होता है । स्त्री-पुरुषों के शरीर में शुक्रधातु की कमी का रोग निकल जाता है और संतानप्राप्ति की ऊर्जा बनती है ।

✻ २-४ ग्राम हल्दी मिला के लेने से स्वप्नदोष, मधुमेह व पेशाब में धातु जाना आदि में लाभ होता है ।

✻ मिश्री के साथ लेने से स्त्रियों के अधिक मासिक व श्वेतप्रदर रोगों में लाभ होता है ।

✻ १०-१५ मि.ली. रस में उतना ही पानी मिला के मिश्री, शहद अथवा शक्कर का मिश्रण करके भोजन के बीच में लेनेवाला व्यक्ति कुछ ही सप्ताह में निरोगी काया व बलवृद्धि का एहसास करता है, ऐसा कइयों का अनुभव है । (वैद्य सम्मत)

मात्रा : १५-२० मि.ली. रस (आगे-पीछे २ घंटे तक दूध न लें। रविवार व शुक्रवार को न लें।)

✻ सप्तमी, नवमी, अमावस्या, रविवार, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण तथा संक्रांति - इन तिथियों को छोड़कर बाकी के दिन आँवले का रस शरीर पर लगाकर स्नान करने से आर्थिक कष्ट दूर होता है। **(स्कंद पुराण, वैष्णव खंड)**

✻ मृत व्यक्ति की हड्डियाँ आँवले के रस से धोकर किसी भी नदी में प्रवाहित करने से उसकी सद्गति होती है। **(स्कंद पुराण, वैष्णव खंड)** ❑

इलायची

इलायची औषधीय रूप से अति महत्त्वपूर्ण है। यह दो प्रकार की होती है - छोटी व बड़ी।

छोटी इलायची : यह सुगंधित, जठराग्निवर्धक, शीतल, मूत्रल, वातहर, उत्तेजक व पाचक होती है। इसका प्रयोग खाँसी, अजीर्ण, अतिसार, बवासीर, पेटदर्द, श्वास (दमा) तथा दाहयुक्त तकलीफों में किया जाता है।

✻ औषधीय प्रयोग ✻

✻ अधिक केले खाने से हुई बदहजमी एक इलायची खाने से दूर हो जाती है।

✻ धूप में जाते समय तथा यात्रा में जी मिचलाने पर एक इलायची मुँह में डाल लें।

✻ १ कप पानी में १ ग्राम इलायची चूर्ण डाल के ५ मिनट तक उबालें। इसे छानकर एक चम्मच शक्कर मिलायें। २-२ चम्मच यह पानी २-२ घंटे के अंतर से लेने से जी-मिचलाना, उबकाई आना, उलटी आदि में लाभ होता है।

✻ छिलकेसहित छोटी इलायची तथा मिश्री समान मात्रा में मिलाकर चूर्ण बना लें। चुटकीभर चूर्ण को १-१ घंटे के अंतर से चूसने से सूखी खाँसी में लाभ होता है। कफ पिघलकर निकल जाता है।

✻ रात को भिगोये २ बादाम सुबह छिलके उतारकर घिस लें। इसमें १ ग्राम इलायची चूर्ण, आधा ग्राम जावित्री चूर्ण, १ चम्मच मक्खन तथा आधा चम्मच मिश्री मिलाकर खाली पेट खाने से वीर्य पुष्ट व गाढ़ा होता है।

✻ आधा से १ ग्राम इलायची चूर्ण का आँवले के रस या चूर्ण के साथ सेवन करने से दाह, पेशाब और हाथ-पैरों की जलन दूर होती है।

✻ आधा ग्राम इलायची दाने का चूर्ण और १-२ ग्राम पीपरामूल चूर्ण को घी के साथ रोज सुबह चाटने से हृदयरोग में लाभ होता है।

✻ छिलकेसहित १ इलायची को आग में जलाकर राख कर लें। इस राख को शहद मिलाकर चाटने से उलटी में लाभ होता है।

✻ १ ग्राम इलायची दाने का चूर्ण दूध के साथ लेने से पेशाब खुलकर आती है एवं मूत्रमार्ग की जलन शांत होती है।

सावधानी : रात को इलायची न खायें, इससे खट्टी डकारें आती हैं। इसके अधिक सेवन से गर्भपात होने की भी सम्भावना रहती है।

आरोग्य के मूलभूत सिद्धांत

दिवाशयन निशि जागरण, विषमाहार विहार।
वेगावेग निरुद्धि से, बने रोग आधार॥
पीवे अंजलि अष्ट जल, सूर्योदय के पूर्व।
वात पित्त होवे शमन, उपजे शक्ति अपूर्व॥
ग्रीष्म वात संचय करे, वर्षा पित्तज स्राव।
कफ संचय हेमंत ऋतु, ऐसा प्रकृति स्वभाव॥
सहज नियम संयम रहे, सहज रहे मन-प्राण।
स्वरस रसायन ग्रहण का, जब तक करे विधान॥
आत्मचिंतन सब दुःख हरे, हर्षे तन-मन-प्राण।
रोगशांति के हित सदा, धरे इष्ट का ध्यान॥
सत्य-वृत्ति पालन करे, साधे तन-मन-प्राण।
यह विधान आरोग्य का, सकल जीव जग जान॥

संस्था समाचार

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

अप्रैल महीने में मध्य प्रदेश में प्रवाहित हुई पूज्य बापूजी की पावन सत्संग-ज्ञानगंगा में **२२ अप्रैल** को कामदा एकादशी के दिन डुबकी लगाने का सुअवसर मिला **कपास्थल, जि. धार** के सौभाग्यशालियों को । यहाँ पूज्य बापूजी ने भक्ति-ज्ञान बढ़ाने तथा घर में सुख-शांति व बरकत लाने की युक्तियाँ बतायीं और साथ ही एकादशी को फलाहार में पलाश-गोंदयुक्त खजूर की चटनी, कुट्टू का हलवा, पलाश शरबत व नारंगी रस तथा लस्सी आदि प्रसाद भी बँटवाया ।

'सर्वभूतहिते रतः' पूज्य बापूजी द्वारा बिना किसी पूर्वनियोजन के यहाँ नवीन कुटिया के उद्घाटन के साथ सत्संग व विशाल भंडारे का भी आयोजन हुआ । गत वर्ष दशहरे के पर्व पर यहाँ गरीबों में मकान-वितरण करके तो इस बार अन्न, आटा, साड़ियाँ, ब्लाउज, धोती-कुर्ता, टोपियाँ, स्टील के बर्तन, फल, मिठाई, तेल, माचिस, साबुन, जूते, चप्पल आदि जीवनोपयोगी वस्तुओं के साथ नकद दक्षिणा देकर पूज्य बापूजी ने सबकी झोलियाँ खुशियों से भर दीं ।

लाखों-लाखों भक्तों के श्रम व धन को बचाते हुए एवं खुद कष्ट सहते हुए पूज्य बापूजी ने चैत्री पूनम के निमित्त चार राज्यों के चार स्थानों पर पूर्णिमा दर्शन-सत्संग दिया :

(१) २३ से २४ अप्रैल सुबह ८ बजे तक इंदौर में बही ज्ञानगंगा में विकारों से मुक्ति का सरल व अक्सीर मार्ग बताते हुए पूज्यश्री बोले : ''जैसे जंगल में आग लगती है तो सयाने जंगली प्राणी तालाब में खड़े हो जाते हैं । ऐसे ही काम, क्रोध, भय, लोभ, चिंता आये तो तुम अंतर्यामी परमात्मा के आनंद-सरोवर में पहुँच जाना तो विकारों से अप्रभावित रहोगे ।''

(२) २४ अप्रैल को **(दोप. १२ बजे तक)** पूज्य बापूजी ने **बोईसर (महा.)** के भक्तों को दर्शन-सत्संग द्वारा कृतार्थ किया ।

(३) तत्पश्चात् पूज्यश्री **२४ (दोप.) से २५ सुबह ८ बजे तक** आयोजित पूनम दर्शन-सत्संग के लिए **वापी (गुज.)** पहुँचे । ६ वर्षों के बाद अपने प्यारे बापूजी का दर्शन-सान्निध्य पाकर वापी की जनता भावविभोर हो उठी । यहाँ ईश्वरप्राप्ति का सरल मार्ग बताते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''ईश्वरप्राप्ति कठिन नहीं है । जिसके जीवन में गुरुदीक्षा है, गुरु में श्रद्धा है वह चाहे अंधा हो, लूला-लँगड़ा हो, पार हो जाता है । बस ईश्वरप्राप्ति का लक्ष्य और सद्गुरु में श्रद्धा - दो ही चाहिए ।''

(४) २५ (सुबह ११ बजे) से २६ अप्रैल तक चैत्री पूनम और श्री हनुमान जयंती के पावन अवसर पर पूज्य बापूजी का सान्निध्य पाकर **गुड़गाँव (हरि.)** वासी धन्य-धन्य हो गये । यहाँ उपस्थित विशाल जनमेदनी को सम्बोधित करते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''हनुमानजी ज्ञानियों में अग्रगण्य हैं, त्याग में अद्वितीय हैं और पूरे कर्मठ हैं । उनमें इन्द्रिय-बल, मनोबल और ब्रह्मचर्य-बल भी है । नीतिज्ञान में निपुणता, शूरवीरता और पक्षपात में न बह जाना - ऐसी दक्षता हनुमानजी में है । यह हनुमान जयंती का पर्व हमें इस तरफ उत्साहित करता है कि हमारे जीवन में भी हनुमानजी के इन दिव्य गुणों की आवश्यकता, महत्त्व जागृत हो और उन्हें अपने जीवन में ले आयें, निर्दुःख हो जायें, खुशहाल हो जायें, सदा के लिए निहाल हो जायें ।''

इसके बाद **२६ अप्रैल शाम** से शुरू हुआ पूज्यश्री का हरिद्वार में एकांतवास । इस एकांतवास का विशेष लाभ मिला आवासीय संत श्री आशारामजी गुरुकुलों के चुने हुए विद्यार्थियों को । प्रथम चरण में १ से ३ अप्रैल तक आगरा,

सूरत, भोपाल व जयपुर गुरुकुलों के विद्यार्थियों को पूज्यश्री के सान्निध्य में ३ दिवसीय शिविर का लाभ मिला । दूसरे चरण में अहमदाबाद, इंदौर, छिंदवाड़ा, आगरा, लुधियाना व राजकोट गुरुकुलों के छात्र और छात्राओं को ७ दिवसीय (१ से ७ मई तक) **गुरुकुल विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर** का लाभ मिला । इन शिविरों में पूज्य बापूजी ने ध्यानयोग, भक्तियोग एवं ज्ञानयोग के साथ जीवन में दक्षता, कार्यकुशलता, तत्परता, एकाग्रता आदि गुणों के विकास हेतु कई यौगिक प्रयोग भी करवाये । इन दिनों विद्यार्थियों ने सेवा द्वारा कर्मयोग की भी कला सीखी । इस अनुष्ठान के दौरान बच्चों को अवतरण दिवस पर दुर्लभ एकांत सत्संग-सान्निध्य का लाभ भी मिला ।

१ मई को हरिद्वार एकांतवास में भी देशभर से भक्त अपने सद्गुरुदेव का अवतरण दिवस मनाने पहुँच गये । भक्तों के आग्रह पर पूज्य बापूजी ने विशेष वेशभूषा पहनी और दीप प्रज्वलित किये । इस वेला पर पूज्यश्री ने सत्संगियों को अपने जन्म-कर्म दिव्य बनाने की कुंजी तो दी ही, साथ ही अपने उस आत्म-ऐश्वर्य की झलक साधकों को देते हुए कहा : ''संसारी लोग जो केक काट के जन्मदिवस मनाते हैं, उनसे तो दीये जला के 'जन्मदिवस बधाई हो, जल सुखदायी हो...' ऐसे वैदिक ढंग से जन्मदिवस मनानेवाले भक्तों को हजार गुना फायदा है । लेकिन मेरे लिए आप बोलो, 'पृथ्वी सुखदायी हो, ग्रह सुखदायी हो...' इसकी कोई आवश्यकता नहीं है । अरे ! मुझे पता है कि मेरे से ही सब सुखदायी हैं, वे हमको क्या सुखदायी होंगे ! गुरु का जन्मदिवस मनाने से भक्तों को फायदा होता है कि गुरु के अनुभव को अपना अनुभव बनाने की उमंग जागृत होती है ।''

करुणावान, कर्मयोगी पूज्य बापूजी के पथ का अनुसरण कर देश-विदेश में फैले उनके सेवाभावी शिष्य अवतरण दिवस को **'सत्संग-सेवा दिवस'** के रूप में मनाकर **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना को समाज में सुदृढ़ करते हैं । देशभर में संकीर्तन यात्राएँ, भंडारे, शरबत व छाछ-वितरण, चल-चिकित्सालय, जेलों में कैदी उत्थान कार्यक्रम, गरीबों में 'भजन करो, भोजन करो, दक्षिणा पाओ' अभियान, रोगियों में फल, दवा आदि का वितरण, गरीबों में जीवनोपयोगी वस्तुओं का वितरण आदि २७ मुख्य सेवा अभियानों तथा अन्य अनेक सेवा अभियानों के साथ ही लगातार दो वर्षों से चल रहे गर्म भोजन के डिब्बों के वितरण अभियान का भी नूतनीकरण अवतरण दिवस पर हुआ ।

शरबत, छाछ एवं जल प्याऊ अभियान इस दिन से व्यापक रूप ले लेता है । अवतरण दिवस से लेकर पूरी गर्मियों में बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन इत्यादि विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर निःशुल्क शीतल पलाश शरबत, छाछ या जल प्याउएँ चलायी जाती हैं । देशभर में भ्रमण करके आत्मानंद का रसपान करानेवाले पूज्य बापूजी अपने सत्संगों में लाखों-लाखों भक्तों को भर-भर गिलास शीतल-बलप्रद पलाश शरबत या तरबूज, आम आदि फलों के रस का पान कराके इस अभियान को और भी व्यापक रूप दे देते हैं । □

✻ पूज्य बापूजी के आगामी पूर्णिमा दर्शन-सत्संग कार्यक्रम ✻

दिनांक	स्थान	सत्संग-स्थल	सम्पर्क
२३ व २४ मई (सुबह ६ से ८-३०)	बड़ौदा (गुज.)	गुजरात हाउसिंग बोर्ड मैदान, सुभानपुरा	९७२३१७९५२५, ८४८५९४४७०
२४ मई (सुबह १० से दोपहर २)	नई दिल्ली	रामलीला मैदान	९८१०१६५८९४, ९८११०४१३४२
२५ से २७ मई	हरिद्वार	पंतद्वीप मैदान, भीमगौड़ा	९३६८२१३००८, ९८९७८०४४७४

वापी (गुज.) में पूर्णिमा दर्शन-सत्संग
बोईसर-मुंबई में पूर्णिमा दर्शन-सत्संग
ब्यावरा, जि. राजगढ़ (म.प्र.)
रतलाम (म.प्र.)
सोयत कलाँ, जि. शाजापुर (म.प्र.)
रंगाराखेड़ी, जि. धार (म.प्र.)

RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2013

Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month. * Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.

देवास (म.प्र.) में सत्संग

गुड़गाँव (हरि.) में पूर्णिमा दर्शन-सत्संग

इंदौर में पूर्णिमा दर्शन-सत्संग

आगर, जि. शाजापुर (म.प्र.) में सत्संग

कपास्थल, जि. धार (म.प्र.) के गरीबों में अनाज, आटा, साड़ियाँ, ब्लाउज, धोती-कुर्ता, टोपियाँ, स्टील के बर्तन, फल, मिठाई, तेल, माचिस, साबुन, जूते, चप्पल आदि जीवनोपयोगी वस्तुओं के वितरण के साथ-साथ उन्हें भरपेट भोजन कराके नकद दक्षिणा भी दी गयी।